भाषा सीखने और सिखाने के आयाम

पत्रिका के संवाद स्तम्भ की दूसरी कड़ी आपके सामने है। इस संवाद का विषय था "कक्षा में भाषा सीखने-सिखाने के पहलू"। इस संवाद में दक्षिण दिल्ली के तिलंगपुर कोटला के प्राथमिक स्कूल के शिक्षक डॉ अमित प्रकाश, एस.डी.एम.सी विकासचारी स्कूल की शिक्षिका नीतू पांचाल निधि, दक्षिण दिल्ली नगर निगम प्राथमिक विद्यालय नजफगढ़ ज़ोन की शिक्षिका अंशु कुमारी ने भागीदारी की। इस प्रक्रिया में रजनी द्विवेदी ने सहजकर्ता और हृदयकान्त दीवान ने विशेषज्ञ की भूमिका निभाई। दिल्ली विश्वविद्यालय, सामाजिक कार्य विभाग के छात्र आदित्य प्रताप सिंह ने तकनीकी कार्य में सहयोग दिया। संवाद का समन्वय रंजना सिंह ने किया। सं.

रजनी द्विवेदी : हमने आपसे कुछ सवाल साझा किए थे। हम एक-एक करके उन सवालों पर अब विस्तार से बात करना चाहेंगे। इस बातचीत में आप जिन स्कूल के अनुभवों को चाहें, उन्हें साझा कर सकते हैं। सीखने-सिखाने के सन्दर्भ में इस पर बहुत बात होती है कि शिक्षण बच्चों की मातृभाषा में होना चाहिए, इससे बच्चों को सीखने में मदद मिलती है। लेकिन किस भाषा को बच्चों की मातृभाषा मानें? दिल्ली में पढ़ने वाले बच्चे हिन्दी भी जानते होंगे, कुछ पंजाबी/हरियाणवी भी और कुछ और अन्य भाषाएँ भी। हर कक्षा में अलग-अलग पृष्ठभूमि के बच्चे आते हैं। अतः मूल सवाल यह है कि किस भाषा को मातृभाषा कहेंगे? यानी मातृभाषा के विचार को आप कैसे समझते हैं?

अंशु कुमारी : जैसा कि नाम से ही पता चलता है, मातृभाषा मतलब माता-पिता से मिलने वाली भाषा है, अर्थात, जन्म के बाद बच्चा अपने आस-पास के परिवेश, परिवार, वातावरण से जो भाषा प्राप्त करता है, जो भी सीखता है, उसे हम मातृभाषा कहते हैं। मातृभाषा से ही बच्चे का सामाजिक और भाषाई विकास होता है या उसकी पहचान बनती है और मेरा मानना यह है कि मातृभाषा से हिन्दी भाषा सीखने में बहुत ज़्यादा मदद मिलती है। एक तरह से मातृभाषा हिन्दी भाषा के शिक्षण के लिए एक नींव प्रदान करती है। हम यहाँ प्रारम्भिक कक्षाओं में शिक्षण की बात कर रहे हैं। इस सन्दर्भ में एक ख़ास बात यह है कि हर एक बच्चा जो विद्यालय में प्रवेश करता है वह ख़ाली नहीं आता है, वह अपने साथ बहुत सारे शब्दों को लेकर आता है। चाहे वह शब्द मानक शब्द न हों, लेकिन वह उसकी मातृभाषा, उसके आस-पास के वातावरण से, उसके समाज से, उसके परिवार से, उसके परिवेश से जुड़े होते हैं। जैसे ही वह विद्यालय में प्रवेश करता है उसे कुछ नया-सा महसूस होता है, उसमें झिझक आ जाती है, उसमें भाषा के सम्बन्ध में आत्मविश्वास की कमी हो जाती है। एक शिक्षक का यही कार्य है कि बच्चा जो शब्द भण्डार अपने साथ लेकर आता है, उसको स्कूल में और विकसित करे। उसकी झिझक को, और उसके आत्मविश्वास की कमी को दूर करे और उसके पास उपलब्ध ज्ञान के साथ-साथ नए ज्ञान का समावेश करे। उसके लिए शिक्षक विभिन्न तकनीकें, विधियाँ उपयोग में लाता है। एक शिक्षक द्वारा यह विधियाँ उस बच्चे के स्तर के अनुसार ही उपयोग में लाई

जानी चाहिए। उदाहरण के लिए आमतौर पर हम सीधा ही उसे वर्ण सिखाने से शुरू करते हैं। सीधे ही वर्ण न सिखाकर हमें पहले बच्चे से आपसी सम्बन्ध व तालमेल स्थापित करना चाहिए। अगर क्लास में घुसते ही हम सीधे उसे 'अ से अनार' बताएँगे तो उसको निखारने के लिए एक मंच या नींव जो हम तैयार कर रहे हैं वह पूरी तरह विकसित नहीं हो पाएगी। इसके लिए हमें बच्चों को ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए जिससे उसके अन्दर की सारी प्रतिभा व शब्द भण्डार को वह बहुत ही अच्छी तरह से सबके सामने बिना किसी झिझक के प्रस्तुत कर सके। बच्चे की जिज्ञासा भी अच्छी तरह से विकसित हो पाए।

हमें क्लास में कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे उसे अपने बारे में बोलने का अवसर मिले। जैसे बच्चे से कहें कि आपके घर में कौन-कौन है? वह बताएगा, मम्मी-पापा, बहन-भाई हैं। स्कूल आते समय आपने रास्ते में आस-पास क्या-क्या देखा? बच्चा उन चीज़ों के नाम बताएगा तो इस तरह से उसका शब्द भण्डार हमें मिलेगा। हम उसको ब्लैकबोर्ड पर लिख दें या कॉपी में लिखें। ब्लैकबोर्ड पर लिखेंगे तो ज़्यादा अच्छा रहेगा। उसके बाद इन शब्दों के चित्र भी बनाए जा सकते हैं।

ऐसे बहुत से अभ्यासों के बाद शब्दों से बच्चों को हम वर्ण पर ले जाएँगे तो वह उन वर्णों को अच्छी तरह पहचानकर समझ पाएगा और आने वाले समय में उनको उपयोग में ला पाएगा। ऐसे ही जैसे अगर हमें बच्चे को सजीव-निर्जीव चीज़ों का ज्ञान देना है, तो हम बच्चे को ही कक्षा में खड़ा करके, एक बच्चे को बोलेंगे चलकर दिखाओ, साँस लेकर दिखाओ, हँसकर दिखाओ। उस बच्चे के साथ-साथ पूरी कक्षा में मुक्त चर्चा का माहौल बनेगा, बच्चे सक्रियता से भाग लेंगे और आनन्दपूर्वक उस चीज़ को सीखेंगे और कभी भी नहीं भूलेंगे। उसका सजीव-निर्जीव के सम्बन्ध में अधिगम एक तरह से स्थाई अधिगम का रूप ले लेगा। जैसे साँस लेकर दिखाओ– सभी बच्चे साँस लेंगे।

मैंने एक प्रथम नाम के बच्चे को कहा अब जो मैं बोलूँगी वैसा ही करना। प्रथम, किताब को बोलो कि वह चले। तो फिर बच्चों से प्रश्न पूछेंगे, बातचीत करेंगे, चर्चा करेंगे कि क्या किताब चली? नहीं चली, अच्छा तो किताब ने प्रथम की बात नहीं मानी। दूसरे बच्चे को खड़ा करेंगे, आप बताओ यह क्या है? यह बोतल है, बोतल को चलने के लिए बोलो। क्या बोतल चली? तो इस तरह से हम बच्चे के साथ एक चर्चा विकसित करेंगे, क्लास में एक स्वस्थ माहौल बनाएँगे ताकि बच्चों का ज्ञान विकसित हो पाए।

मेरा ख़ुद का एक अनुभव है। क्लास में एक छोटा-सा बच्चा है, उसको क्लास में कुछ कराओ तो वह बहुत चुप-सा रहता है। इतनी आसानी से हिन्दी भाषा को नहीं सीख पाता, लेकिन मैंने जब यह गतिविधि कराई तो उसमें उसने बहुत अच्छी भागीदारी की। जो बिन्दु मुझसे छूट गए थे वह उसके बारे में मुझे व्यक्तिगत तौर पर बता रहा था। जैसे, जब यह क्रिया मैंने कराई तो मैंने कहा, अच्छा बताओ इनमें क्या अन्तर है? यह चल सकता है और यह नहीं चल सकता है। एक बच्चे ने बहुत ही सुन्दर जवाब दिया कि इसमें जान है और इसमें जान नहीं है। बच्चों का मेरे विषय से परिचय हो गया कि जिन वस्तुओ में जान पाई जाती है वह सजीव हैं, जिनमें नहीं पाई जाती वह निर्जीव हैं। अब वह कौन-कौन से हैं? वह इनको विभेद भी करना सीख जाएँगे।

इसी तरह से मैंने ब्लैकबोर्ड पर एक पौधे का चित्र बनाया, साथ ही खिड़की से बाहर भी पौधे थे, मैंने कहा कि खिड़की से बाहर देखो, यहाँ पर पौधा लगा है, यह पौधा सजीव है या निर्जीव है? तो बच्चों ने जवाब दिया निर्जीव है। क्यों निर्जीव है? क्योंकि यह साँस नहीं ले सकता, यह चल नहीं सकता, एक बच्चे ने जवाब दिया। मैंने कहा कि जैसे तुम भोजन खाते हो वैसे ही क्या पौधा भोजन लेता है? हाँ मैडम, वह पानी पीता है। मैंने कहा, पानी तुम भी पीते हो। यह भोजन क्या खाता है, कुछ बता सकते हो? बच्चे ने बताया कि मिट्टी इसका भोजन है।

फिर मैंने और आगे बताया कि इसे क्लास में ले आएँ तो क्या क्लास में यह जीवित रह पाएगा? क्या इसमें जान रहेगी क्लास में? नहीं मैडम, इसको हवा नहीं मिलेगी। मैंने कहा, हवा तो हम इसको पंखे से भी दे देंगे, खिड़की पर भी रख देंगे तो भी हवा आ जाएगी। एक ने कहा इसको मिट्टी नहीं मिलेगी, क्लास में फर्श है। मैंने कहा कि गमले में लगाएँगे तो मिट्टी भी ले आएँगे हम। फिर मैंने कहा, और क्या हो सकता है? तो एक बच्चे ने अपनी प्रादेशिक भाषा, अपनी मातृभाषा में जवाब दिया कि मैडम 'घाम' ले आएँगे। अब घाम सब बच्चों को नहीं पता, चूँकि मैं भी थोड़ा उस वातावरण से परिचित हूँ, तो मुझे मालूम था घाम। पहले मुझे भी कठिनाई हुई समझने में कि एकदम उसने क्या बोल दिया क्योंकि मेरे दिमाग़ में यह नहीं था कि वह बच्चा इस शब्द का उपयोग कर लेगा। दूसरी बार मैंने कहा कि बच्चे और क्या उपयोग कर सकते हैं तो फिर से उसने दोहराया घाम।

घाम स्थानीय भाषा में धूप को बोलते हैं। फिर मैंने उन्हें यह बताया कि क्या पौधे धूप नहीं खाते हैं, धूप नहीं लेते। छोटे बच्चे हैं तो उनको खाने से सम्बन्धित करके बताया क्योंकि जितनी हमारी भाषा उनके साथ सहज रहेगी वह उतना ही सरलता से सीखेंगे। तो उसने बोला कि हाँ धूप खाते हैं। तो मैंने बोला हाँ इस तरह से उनमें भी जान हुई या नहीं? तो एक छोटा बच्चा जो क्लास में बहुत ज़्यादा सक्रिय नहीं रहता, आमतौर पर जवाब भी नहीं देता उसने बताया कि यह बड़ा होता जाता है। यह बिन्दु मुझसे भी छूट गया था। तो मैंने भी कुछ चीज़ें जोड़ीं कि जैसे तुम छोटे से बड़े होते हो, हर वर्ष तुम्हारा जन्मदिन आता है, एक वर्ष बाद तुम्हारी आयु बढ़ती है उसी तरह से पौधा भी बढ़ता है तो सजीव चीज़ें भी बढ़ती हैं। तो इसमें बहुभाषिता भी आई, इसमें मातृभाषा का भी प्रयोग हुआ और मानक भाषा भी हम इसमें डाल सकते हैं। यह विषय समाप्त करने के बाद मैंने ब्लैकबोर्ड पर चित्र बना दिया। चित्र बनाने के बाद हमने उनसे इन चीज़ों के नाम पूछे, उन्होंने नाम बताए। उनको भले ही लिखना न आए। टीचर नाम लिखेगा तो इसमें मात्रा वाले शब्द भी आएँगे, बिना मात्रा के शब्द भी आएँगे। तो यहाँ से हम उनको मात्राओं का ज्ञान दे सकते हैं। यहाँ से हम उनका शब्द भण्डार विकसित कर सकते हैं। वर्ण की पुनरावृत्ति करनी है। तो वर्ण की पुनरावृत्ति भी होगी जैसे इसका नाम इस वर्ण से शुरू हो रहा है, यह भी करा सकते हैं तो अभ्यास भी इसी के अन्तर्गत आ गया। तो इस तरह से हम मातृभाषा का उपयोग मानक भाषा को कक्षा में सिखाने में कर सकते हैं और इसमें बहुभाषा भी बेहद सहायता प्रदान करती है।

डॉ अमित प्रकाश : मेरे अनुसार मातृभाषा वह भाषा है जो बच्चा अपने घर, अपने परिवार, अपने परिवेश से प्राप्त करता है। कहा जाता है कि परिवार ही उसका सबसे पहला विद्यालय है। विद्यालय आने से पूर्व वह बहुत सारी चीज़ें संचित करता है। वह इस संचय को लोगों के सम्पर्क में आने से, अपने परिवार के सम्पर्क में आने से और बढ़ाता रहता है। अगर पूछा जाए कि वह संचय मानक है या नहीं, तो मैं कहूँगा कि मानक नहीं है, बँधा-बँधाया नहीं है, किसी नियमों का पालन नहीं करता है। लेकिन यह भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अगर उसकी भाषा के सम्बन्ध में मैं बात करूँ एक मानक प्रारूप की, तो उसका प्रारूप मानक नहीं होगा। मातृभाषा का प्रारूप मानक नहीं होगा। उदाहरण स्वरूप मैं बताना चाहूँगा कि प्राथमिक कक्षा में जो बच्चे मेरे पास आते हैं एक विशेष पृष्ठभूमि के होने के कारण वह कुछ शब्दों का उच्चारण करते हैं जैसे 'छोरी' जो कि लड़की के लिए बोला जाता है। अब अगर मुझे उन्हें 'लड़की' समझाना है तो उनकी मातृभाषा से ही मुझे मानक भाषा की तरफ़ चलना पड़ेगा। उन दोनों शब्दों में एक जुड़ाव, एक सेतु मुझे बनाना पड़ेगा। अगर मैं सीधा ही उन्हें मानक भाषा के प्रारूप की तरफ़ लेकर जाता हूँ तो मैं भाषा शिक्षण में सफल नहीं हो पाऊँगा। दूसरी बात मैं कहना चाहूँगा कि मातृभाषा में उन्हें एक अनुकूल वातावरण मिलता है, जैसा पिता

बोल रहे हैं, जैसा माँ बोल रही हैं वैसे ही वह बोलना सीखता है। लेकिन जब वह विद्यालय में आता है तो हर चीज़ के बँधे-बँधाए नाम होते हैं, उसमें विविधता स्वीकार नहीं होती। इससे उन्हें अपने अनुकूल वातावरण नहीं मिल पाता है, जिसके कारण उनमें झिझक उत्पन्न होती है। और यह झिझक धीरे-धीरे उन्हें पीछे ले जाती है, अगर शिक्षक इस बात को समझ नहीं पाता है। मैं मातृभाषा में यही एक छोटी-सी चीज़ जोड़ना चाहूँगा कि बच्चा जो संचय करके आता है, अपनी पूर्व पृष्ठभूमि से जो लेकर आता है, हमें उसी चीज़ को आगे बढ़ाना है न कि उसे समाप्त करना है।

नीतू पांचाल : मातृभाषा क्या है, इस सन्दर्भ में मैं कहना चाहूँगी कि बच्चे के जन्म लेने के बाद बच्चा जो प्रथम भाषा सीखता है अपने परिवार से, अपने परिवेश से और जिस प्रथम भाषा का प्रयोग करता है, उसे ही हम मातृभाषा कहेंगे। मातृभाषा विद्यार्थी के जीवन का आधार है, उसके जीवन की नींव है, क्योंकि शुरुआती जीवन के अनुभव किसी भी व्यक्ति के जीवन में एक बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं। शुरुआती जीवन के अनुभव बच्चे की अपनी मातृभाषा में होते हैं, उनको ग्रहण करने का माध्यम भी मातृभाषा होती है और उसी के माध्यम से वह उन अनुभवों की अभिव्यक्ति भी करता है। एक प्रकार से हम कह सकते हैं कि मातृभाषा सहज अभिव्यक्ति का आधार है। मानक भाषा में विद्यार्थी अपने आपको उतना सहज अनुभव नहीं करता इसलिए प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा पर काफी ज़ोर दिया जाना चाहिए।

रजनी द्विवेदी : नीतू जी और अमित प्रकाश जी ने जो बात कही कि माँ से, माता-पिता से और आस-पास के परिवेश से बच्चे जो भाषा सीखते हैं वही उनकी मातृभाषा है। बहुत सारी ऐसी जगह हैं और दिल्ली तो ऐसी जगह है ही जहाँ विभिन्न भाषा भाषी परिवार साथ, आस-पास रहते हैं और इन परिवारों के बच्चे एक-दूसरे से सम्पर्क में आते ही हैं, मतलब उनके परिवेश में भी बहुत सारी भाषाएँ हैं। यहाँ क्या हम ऐसा कह सकते हैं कि एक बच्चे की एक से अधिक मातृभाषाएँ हो सकती हैं?

अंशु कुमारी : जहाँ उसका जन्म हुआ है वही उसकी मातृभाषा कहलाती है।

रजनी द्विवेदी : अगर मैं फिर से कहूँ तो सवाल यह है कि मान लीजिए बहुत सारे दिल्ली के इलाक़े हैं जहाँ पर अलग-अलग भाषा बोलने वाले परिवार रहते हैं। दिल्ली में रह रहे बच्चे का हिन्दी से वास्ता तो पड़ेगा ही, उसके अलावा कुछ-कुछ इलाक़ों में हरियाणवी भी हो सकती है, क्योंकि वह सीमा से लगा हुआ है। कहीं-कहीं उत्तर प्रदेश की सीमा भी पास में है तो वहाँ की हिन्दी और दिल्ली की हिन्दी में अन्तर हो सकता है। जो बच्चा इस तरह के माहौल में रह रहा है उसके लिए क्या एक से अधिक मातृभाषाएँ होंगी? और भी भाषाएँ हैं जैसे तमिल है, मलयालम है, भोजपुरी है, मैथिली है, पंजाबी है, इन भाषाओं को बोलने वाले भी बहुत सारे परिवार दिल्ली में हैं। उनके बच्चे भी यहीं हैं। इनके परिवार की भाषा जैसे अवधी है या मैथिली है, या फिर कोई दक्षिण भारतीय भाषा है और हिन्दी भी बच्चे साथ में सीख रहे हैं तो क्या हम कह सकते हैं कि एक बच्चे की एक से अधिक मातृभाषाएँ हो सकती हैं?

अमित प्रकाश : बिल्कुल यह सम्भव है कि मातृभाषा एक से अधिक भी हो सकती हैं। इसका उदाहरण मैं आपको देना चाहूँगा। मेरा विद्यालय जिस गाँव में स्थित है वहाँ पास ही खेत में एक समुदाय बसता है। यह मज़दूरों का एक वर्ग है और उनमें काफ़ी सामाजिक विभिन्नताएँ हैं, एक मराठी परिवार है वहाँ पर, कुछ बिहार से आए हुए लोग हैं, कुछ हरियाणा से आए हुए लोग हैं। उनके बच्चे जब मेरे विद्यालय में आए तो उनकी मातृभाषा के जो शब्द थे वह तीनों-चारों परिवेश से जुड़े हुए थे। एक बच्चा महाराष्ट्र के परिवार से था, मराठी उसकी मातृभाषा थी लेकिन वह बच्चा एक हरियाणा से आए परिवार के साथ मिलता-जुलता था। मैंने पाया कि वही लड़का

'छोरी' भी बोल रहा था और अपनी मातृभाषा में 'लड़की' का उच्चारण भी कर रहा था। मैंने पाया कि ऐसे बच्चों का शब्दकोश अपनी एक मातृभाषा की बजाय, तीन-चार भाषाओं के होने के कारण अधिक समृद्ध था। अतः मेरा मानना है कि मातृभाषाएँ एक से अधिक भी हो सकती हैं। यह पूर्णतः इस चीज़ पर निर्भर करता है कि बच्चा किस परिवेश में पल-बढ़ रहा है।

नीतू पांचाल : मैं भी इस बात से सहमत हूँ। बहुत सारे ऐसे परिवारों का उदाहरण भी हम ले सकते हैं जहाँ पर बच्चे की माता अलग भाषाई परिवेश से हैं और पिता अलग भाषाई परिवेश से हैं। अन्तर्प्रान्तीय और अन्तरधर्म के विवाह का भी प्रचलन बढ़ा है। अगर बच्चा इस तरह के परिवार से है, और यह बच्चा जब विद्यालय आता है तो मैं यह नहीं कहूँगी कि वह दो मातृभाषाएँ लेकर आया है। मेरा मानना है कि उसके पास एक मिली-जुली मातृभाषा या एक मिश्रित भाषा होगी, जिसे हम एक नई मातृभाषा का नाम भी दे सकते हैं। ज़ाहिर है कि उसमें दो भाषाओं के शब्द अवश्य होंगे। लेकिन उसको हम यह नहीं कह सकते हैं कि उसके पास दो मातृभाषाएँ होंगी। मातृभाषा एक ही होती है, लेकिन उसमें जो शब्द भण्डार है वह मिश्रित शब्द भण्डार होगा, ऐसा मुझे लगता है।

अंशु कुमारी : मैं दोनों बिन्दुओं से सहमत हूँ। मातृभाषा तो बच्चे की एक होती है, जो कि जन्म के पश्चात वह अपनी माँ से, अपने घर-परिवार से सीखता है। लेकिन जब बच्चे का परिवेश बदलता है या जब वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करता है, उदाहरण के लिए अगर उसका जन्म बिहार में हुआ है और वह दिल्ली में आकर रह रहा है, तो उसकी जो मातृभाषा है उसमें दिल्ली का प्रभाव भी देखने को मिलेगा। मातृभाषा एक ही होगी लेकिन मातृभाषा का जो शब्द भण्डार है उसमें मिश्रित शब्द भण्डार या भाषा का मिश्रित रूप हमें देखने को मिलेगा।

रजनी द्विवेदी : अमित प्रकाश जी ने कहा कि एक से अधिक मातृभाषाएँ हो सकती हैं और वह इससे पूरी तरह सहमत है। हम आगे बढ़ते हैं। एनसीएफ का दस्तावेज़ कहता है, और इस बात की पैरवी भी करता है कि प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा में शिक्षण होना चाहिए। इस बारे में आप लोगों का क्या मत है और मातृभाषा में शिक्षण होना चाहिए या नहीं?

नीतू पांचाल : हम सभी जानते हैं कि भारत, अनेक भाषाओं वाला देश है। 22 भाषाओं को तो हमारे संविधान में भी मान्यता मिली हुई है। हमारे पास प्राथमिक स्तर पर जो विद्यार्थी आते हैं उनका अलग-अलग भाषाई परिवेशों से होना स्वाभाविक है। मैं कहूँगी कि मातृभाषा को हमें एक 'साधन' बनाकर चलना चाहिए और मातृभाषा के सहयोग से हमें बच्चे को मानक भाषा की ओर ले जाना चाहिए। हमारा 'साध्य' मानक भाषा है लेकिन मातृभाषा साधन के रूप में प्रयोग की जानी चाहिए। विद्यालय में बच्चे की मातृभाषा को सम्मान देना चाहिए। जैसा कि पहले भी कहा था कि जो शिक्षक का कार्य है वह मानक भाषा और मातृभाषा के बीच में एक सेतु बनाने का है। सबसे पहला क़दम होना चाहिए मातृभाषा को आधार बनाते हुए, मातृभाषा को सम्मान देते हुए बच्चों को मानक भाषा की तरफ़ ले जाना। मातृभाषा या मानक भाषा दोनों में से किसी एक को चुनने की बजाय दोनों के समन्वय के द्वारा हमें अधिगम को अंजाम देना चाहिए क्योंकि हमारा अन्तिम उद्देश्य केवल भाषा सीखना-सिखाना नहीं है। विद्यार्थियों को पढ़ाने का अन्तिम उद्देश्य उनको बेहतर व्यक्तित्व के रूप में उभारकर सामने लाना और उनके भावी जीवन को सरल और सहज बनाना है। मातृभाषा को साधन बनाकर मानक भाषा को साधा जाए। प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा महत्त्वपूर्ण इस कारण से भी है कि मातृभाषा विद्यार्थी के अस्तित्व से जुड़ी है। अगर हम उसकी मातृभाषा को नकारते हैं तो इसका मतलब उसके अस्तित्व को नकारने वाली बात है। इसलिए हमें मातृभाषा को निस्सन्देह सम्मान देना चाहिए और विद्यार्थियों को मातृभाषा के

प्रयोग की और अपने सहपाठियों के साथ मातृभाषा में बात करने की पूर्ण, खुली अनुमति देनी चाहिए। एक शिक्षक के रूप में भी हमारे अन्दर उनकी मातृभाषाओं को सीखने की ललक होनी चाहिए ताकि विद्यार्थियों को लगे कि, हाँ मेरी मैडम मेरी मातृभाषा को बढ़ावा देती हैं। इससे विद्यार्थी एक शिक्षक के साथ भी ख़ुद को बहुत अच्छी तरह से समन्वित कर पाएगा। और एक अच्छा शिक्षक और शिक्षार्थी सम्बन्ध यदि कक्षा में बन पाता है तो केवल भाषा शिक्षण ही नहीं बाकी विषयों का शिक्षण भी बेहद सरल हो जाएगा।

डॉ अमित प्रकाश : मातृभाषा बच्चा अपने साथ लेकर ही आता है, उसका संचय उसके पास पहले से ही होता है और सीधा ही उसे किसी मानक भाषा के रूप में परिवर्तित नहीं किया जा सकता। बँधे-बँधाए नियमों में उसे नहीं डाला जा सकता। अगर आप उसके अस्तित्व को ही नकारेंगे तो उस बच्चे में झिझक उत्पन्न होगी और कहीं न कहीं वह अपनी कक्षा में पिछड़ जाएगा। जैसा कि मैडम ने कहा कि जहाँ से, जो भी वह लेकर आया है, जैसा भी उसका संचय है, भण्डार है, उसके अस्तित्व को कहीं न कहीं हमें एक पहचान देनी चाहिए, उसको नकारना नहीं चाहिए। जैसा कि बार-बार कहा गया है उस अस्तित्व के साथ ही शिक्षक की भूमिका एक सेतु बनाने वाले की होनी चाहिए। शिक्षक मातृभाषा को धीरे-धीरे मानक भाषा के नियमों से जोड़ सके तो वह सीखने में मदद कर पाएगा। तो यहाँ पर मैं कहना चाहूँगा कि प्राथमिक कक्षाओं में जब आप शिक्षण की बात करते हैं तो सीधे-सीधे मानक भाषा पर नहीं आना चाहिए। बच्चे को पूर्णतः स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह अपने आप को अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्त कर पाए और इस अभिव्यक्ति को नकारना नहीं चाहिए बल्कि उसकी सराहना भी होनी चाहिए।

अंशु कुमारी : प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण मातृभाषा में होना चाहिए। बच्चा अपने परिवेश से, परिवार से बहुत कुछ सीखकर विद्यालय आता है। हम सभी को यह भली-भाँति ज्ञात है कि शिक्षण बच्चे की मानसिक आयु, व्यक्तिगत भिन्नताओं, शिक्षण के सूत्रों अर्थात मनोवैज्ञानिक सूत्रों को ध्यान में रखकर देना चाहिए। इस क्रिया में मातृभाषा एक संसाधन व उपकरण का कार्य करती है। हम शिक्षण में अक्सर ज्ञात से अज्ञात और सरल से कठिन की ओर जाने की बात करते हैं। मुझे लगता है मातृभाषा इसमें मदद करती है। मातृभाषा के द्वारा तथ्यों/प्रश्नों को समझना सरल हो जाता है। मेरा यह भी मानना है कि मातृभाषा बच्चे को उच्च शिक्षा को प्राप्त करने में भी सहायता प्रदान करती है। आरम्भिक वर्षों में मातृभाषा या भाषा का जो शिक्षण है वह बच्चे के आगामी वर्षों के लिए नींव प्रदान करता है। इन शुरुआती वर्षों में बच्चों को अपने भावों की अभिव्यक्ति करने, अपनी बात कहने के लिए जगह देना, जो मातृभाषा में ही अधिक सम्भव होता है, आगामी वर्षो में भाषा का सहज प्रयोग करने के लिए उसे आत्मविश्वास देता है जो उसके भावों की अभिव्यक्ति को और अधिक सहज व स्वाभाविक बनाता है।

मातृभाषा का उपयोग अगर बच्चा कक्षा में कर रहा है तो हमें उसे नकारना नहीं चाहिए। एक अनुभव साझा करना चाहूँगी— मेरी क्लास में एक बच्चा उत्तर प्रदेश के किसी ज़िले से आया था। वह हमेशा कहता कि मैडम कच्ची पेंसिल से काम करूँ या पक्की पेंसिल से काम करूँ? मुझे समझने में दिक़्क़त हुई कि कच्ची पेंसिल क्या है और पक्की पेंसिल क्या है? उसने फिर दोहराया, मैडम काम किससे करूँ, कच्ची पेंसिल से करूँ या पक्की पेंसिल से करूँ? जब उसको लगा कि मुझे समझ में नहीं आया तो मेरे हाथ में जो पैन था उसे दिखाकर उसने कहा कि मैडम इससे करूँ या दूसरे बच्चे के हाथ की पेंसिल दिखाकर कहा कि इससे करूँ? मैंने कहा कि बच्चे इससे (पेंसिल से) करो। उसने कहा, कच्ची पेंसिल से करूँ। मुझे भी एक नया शब्द सीखने को मिला कि किसी क्षेत्रीय भाषा में लकड़ी की पेंसिल को कच्ची पेंसिल कहते हैं

और पैन को पक्की पेंसिल कहते हैं।

नीतू पांचाल : हम यहाँ प्राथमिक कक्षाओं के सन्दर्भ में बात कर रहे हैं। प्राथमिक कक्षा के बच्चे का 'विचार पक्ष' की तुलना में 'भाव पक्ष' ज़्यादा प्रधान होता है, ऐसा मेरा मानना है और अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त और बेहतर साधन मातृभाषा है। कक्षा कक्ष को रोचक व मज़ेदार बनाने के लिए और ज़्यादा प्रभावशाली बनाने के लिए बच्चे के भाव पक्ष से जुड़ना शिक्षा अधिगम प्रक्रिया की पहली शर्त है। अतः कक्षा में मातृभाषा के प्रयोग की अनुमति छात्रों को देनी चाहिए क्योंकि इससे बच्चा भावनात्मक रूप से अपनी कक्षा में जुड़ता है और उसके सर्वांगीण विकास पर इसका प्रभाव कहीं ना कहीं हमें अवश्य देखने को मिलेगा। मैं भी यहाँ पर अपना एक अनुभव साझा करना चाहूँगी। एक दिन मैं कक्षा में बच्चों को पर्यायवाची शब्द पढ़ा रही थी। मैंने भाषाओं को कक्षा में प्रोत्साहित करने के लिए बच्चों को कहा कि आप 'आम' को अपनी-अपनी भाषा में क्या कहते हैं, बताइए। सभी बच्चों ने अपनी-अपनी भाषा में आम के नाम बताए। बच्चों को बहुत अच्छा भी लगा। बच्चों की रुचि को देखते हुए मैंने कहा कि हम हर दिन कोई शब्द लेंगे और उससे अपनी-अपनी भाषा में वाक्य बनाएँगे, ताकि दूसरे बच्चे भी उससे सीखें।

जब मैंने शिक्षकों के साथ काम किया वहाँ भी मैंने एक गतिविधि करवाई। शिक्षकों के साथ एक गेम खेला— 'पासिंग द बॉल'। एक गेंद सब एक-दूसरे को पास करेंगे, जिसके पास वह गेंद आएगी वह अपनी मातृभाषा में एक वाक्य अपने दूसरे साथी को सिखाएगा या कोई गीत या ग़ज़ल, जिसका उनको सहज व सरल अनुभव है, साथियों को सुनाएगा। मैंने पाया कि गतिविधि में शिक्षकों ने भी बहुत आनन्दअ लिया। छात्र तो निस्संदेह ही इस तरह की गतिविधि में भाग लेंगे तो कक्षा कक्ष का वातावरण और भी रोचक हो जाएगा।

रजनी द्विवेदी : आप सभी ने कहा कि मानक भाषा और मातृभाषा में समन्वय होना चाहिए। समन्वय माने क्या? दूसरा किस तरह से यह समन्वय आप कक्षा में करते हैं, और अधिकतम क्या-क्या हो सकता है? यह भी ध्यान रखना होगा कि मातृभाषाएँ एक से अधिक हैं। एक बच्चे की एक से अधिक मातृभाषाएँ तो हैं ही और फिर कक्षा में भी बहुत-सी मातृभाषाएँ हैं, मतलब अलग-अलग बच्चे अलग-अलग भाषा बोलते हैं।

दूसरा यह कि एक साधन के रूप में मातृभाषा और एक व्यापक परिपेक्ष्य में, जिसमें पहचान, अस्मिता, व्यक्तित्व, विचार करना, उसके एहसास, अभिव्यक्ति की बात हम करते हैं, हम मातृभाषा को कैसे समझेंगे?

नीतू पांचाल : समन्वय इसलिए ज़रूरी है क्योंकि हमें पता है कि हमारे विद्यालय का पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकें मानक भाषा का अनुसरण करती हैं। लेकिन व्यावहारिक पक्ष यह है कि हमारे पास बहुत सारी भाषाओं को बोलने वाले बच्चे भी हैं, वह अपनी-अपनी मातृभाषा का पूर्व अनुभव लेकर हमारे पास आ रहे हैं। शिक्षण अधिगम का एक उद्देश्य यह भी है कि हम निर्धारित पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के समक्ष रखें और उसके सन्दर्भ में विद्यार्थियों को जानकारी दें। एक शिक्षक की यह भूमिका है कि वह मातृभाषा को आधार बनाते हुए उस पाठ्यक्रम के शिक्षण अधिगम के लिए विद्यार्थियों के साथ कार्य करे। मैं एक उदाहरण दूँगी। अभी हाल ही में मैंने विद्यार्थियों को एक अपठित गद्यांश दिया और उसमें मैंने एक छोटी-सी कहानी लिखी और मैंने उस सन्दर्भ को बच्चों के साथ साझा किया कि एक बार एक लकड़हारे की कुल्हाड़ी नदी में गिर गई और कुछ ही देर में जल देवता सोने की कुल्हाड़ी लेकर प्रकट हुए। अब यहाँ पर हम मानक भाषा का रूप इस्तेमाल कर रहे हैं। तो यहाँ पर पहले मैं यह करती कि बच्चों को सीधे-सीधे बता देती कि 'प्रकट' का क्या मतलब होता है। मैंने उस अपठित गद्यांश में से कुछ बोध प्रश्न दिए, तो बच्चों ने पूछा, मैडम 'प्रकट' का क्या मतलब है? मैंने इसका सीधे-सीधे उत्तर नहीं दिया। मैंने कहा

कि आप इस वाक्य को दो-तीन बार पढ़ो और फिर मुझे बताओ कि इस वाक्य से आपको क्या समझ में आ रहा है कि जल देवता सोने की कुल्हाड़ी लेकर प्रकट हुए। तो, बच्चों ने अपने आप ही थोड़ी देर में बोल दिया कि कुल्हाड़ी लेकर सामने आए। तो, यहाँ पर प्रकट शब्द जो एक मानक रूप था उससे एक सरल शब्दावली सामने आई। बच्चों ने ख़ुद ही समझ के आधार पर उस शब्द का अर्थ निकाला। यह समन्वय स्थापित करना है। मानक भाषा से मातृभाषा को जोड़ करके और बच्चों के पूर्व अनुभवों को आधार बनाकर हम भाषा का समन्वय कर रहे हैं। मेरा ऐसा विचार है।

अमित प्रकाश : मातृभाषा और मानक भाषा इन दोनों में जब तक समन्वय नहीं होगा तब तक हम मानक भाषा के उचित प्रारूप को प्राप्त ही नहीं कर सकते हैं, क्योंकि मातृभाषा जो बच्चे ने अपने परिवार से, परिवेश से प्राप्त की उसमें उसके पास बन्दिशें नहीं थीं। उस भाषा को आधार मानकर, हम मानक भाषा की तरफ़ आ सकते हैं। मैं एक उदाहरण देना चाहूँगा अपनी कक्षा का, जैसे ही बच्चे मेरी कक्षा में आते हैं तो मैं उन्हें बोलता हूँ कि पिछले हफ़्ते आपने जो कुछ भी किया वह मुझे लिखकर दिखाइए। उसमें से एक शब्द पर मैं आपका ध्यान दिलाना चाहूँगा कि एक बच्चे ने लिखा कि मेरे पिता 'डिलेवर' हैं। कहीं ना कहीं वह जानता था कि ड्राइवर कोई एक व्यवसाय है। लेकिन वह अपनी मातृभाषा में इसे प्रयोग कर रहा था, जो उसके घर में बोला जाता था। इसको नकारकर मैं उसे सीधा-सीधा ड्राइवर पर लेकर जाऊँ ऐसा हो तो सकता है लेकिन तब वह शब्द, वह बिम्ब जो उसके दिमाग़ में अंकित है अपने पिता का, उनके डिलेवर होने का, वह नहीं होगा। उसे बिल्कुल नया कुछ सीखना होगा। लेकिन जब वह डिलेवर को जानता है तो मैं उसे बड़ी आसानी से ड्राइवर तक लेकर आ सकता हूँ। यहाँ पर मैं कहना चाहूँगा कि सेतु स्थापित करना बहुत ज़रूरी है। दूसरा प्रश्न था कि इसे एक साधन (tool) की तरह देखा जाए या व्यापक रूप में देखा जाए? जब एक व्यक्तित्व की बात होती है तो वह भाषा जो उसकी मातृभाषा होती है वह अहम भूमिका निभाती है। यदि हम भाषा को साधन मानकर चलेंगे तो मानक भाषा तक पहुँचने के पहले ही हमारी यात्रा रुक चुकी होगी। मातृभाषा किसी भी भाषा की यात्रा में ले जाने में आपको 'न्यूट्रीशन' प्रदान करेगा। मैं नहीं मानता कि यह कोई साधन है। मैं इसको व्यापक रूप में देखता हूँ क्योंकि यह व्यक्तित्व का एक हिस्सा है। आगे चलकर भी जब व्यक्ति एक तरह से परिपूर्ण हो जाता है, मानक भाषा के नियमों को अच्छी तरह से जान लेता है, इसका मतलब यह नहीं है कि वह अपनी मातृभाषा को भूल जाता है। जब कभी भी उसे मौक़ा मिलता है, वैसा परिवेश मिलता है, वह मानक भाषा बोलने की बजाय अपनी मातृभाषा में बातचीत करना ज़्यादा पसन्द करता है।

अंशु कुमारी : हिन्दी शिक्षा में मातृभाषा और मानक भाषा दोनों में समन्वय होना बहुत ही आवश्यक है। जैसा कि हमें पता है कि मातृभाषा, मानक भाषा सीखने में एक आधारशिला प्रदान करती है। हमारी आजकल की जो पाठ्यपुस्तकें हैं उनमें भी समेकित उपागम का उपयोग किया गया है यानी मातृभाषा को लेते हुए मानक भाषा तक पहुँचना। पाठ्यपुस्तक में जो कविताएँ हैं, जो लोककथाएँ, लोकगीत, कहानियाँ, चित्र शैलियाँ हैं उनमें बच्चों के परिवेश की झलक मिलती है। जैसे कि उनमें महाराष्ट्र की वर्ली शैली ली गई है, बिहार की मधुबनी शैली पेंटिंग का चित्रण किया गया है। एक मध्य प्रदेश की गोंडी शैली है। यह सब मातृभाषाओं के परिवेश से ली गई विषयवस्तु है, तथ्य हैं, जिनको हमने पाठ्यपुस्तक में प्रस्तुत या संग्रहित किया है। पाठों में, कहानियों में, सांस्कृतिक विधाओं में मातृभाषा के बहुत सारे शब्द अपने आप में समाए हुए हैं, जैसे 'टेसू राजा बीच बाज़ार' यह एक लोकगीत है। बाज़ार के लिए अँग्रेज़ी शब्द मार्केट है स्थानीय भाषा में देखें तो हम उसको मण्डीक भी कहते हैं, कहीं उसको हाट भी कहते हैं, कहीं उसको सोम बाज़ार या साप्ताहिक बाज़ार

के नाम से बोला जाता है। अलग-अलग जगहों पर बाज़ार के भी अलग-अलग नाम हैं और टेसू राजा एक स्थानीय भाषा का शब्द है। शीर्षक से संस्कृति के बारे में तो पता चलता ही है क्योंकि किसी जगह यह खेल भी है और कहीं यह उत्सव भी और यह उस पूरी संस्कृति का द्योतक है। फिर बच्चों को यह लोकगीत सुनने में भी बहुत आनन्द आता है। यह मनोरंजनात्मक है। उनके मन में इसके बारे में जानने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि यह टेसू क्या है? और दूसरे बच्चे भी इस भाषा को जानते हैं और इससे परिचित होते हैं। कक्षा 2 की पाठ्यपुस्तक में ही एक कविता है– तितली और कली। एक पाठ कराने के बाद ही हमें पता चल जाता है कि बच्चों के पास विभिन्न शब्दों के लिए क्या-क्या शब्द और हैं। यह कविता 'तितली और कली' कराने के बाद शिक्षिका या अध्यापक बच्चों को बोल सकते हैं कि अपनी-अपनी भाषा में फूलों के विभिन्न नाम लिखो। तितली को और क्या कहते हैं, वह लिखो। इस तरह से उन्हें शब्दों का ज्ञान मिलेगा और जिनको नहीं पता उनको भी इस चीज़ का ज्ञान मिलेगा, वह भी इस चीज़ से परिचित होंगे और दूसरा बच्चा जिसने अपनी भाषा में यह लिखा उसको भी अपने ऊपर गर्व महसूस होगा कि मेरी मातृभाषा को भी यहाँ पर सम्मान दिया जा रहा है। इस तरह से शिक्षक बच्चों को मातृभाषा से मानक भाषा तक ले जा सकते हैं। शिक्षिका इसमें प्रोत्साहक और प्रेरणात्मक की भूमिका अदा करती है।

नीतू पांचाल : मातृभाषा कहीं न कहीं हम सबके अस्तित्व से जुड़ी हुई है। दूसरी तरफ़ हम कह रहे हैं कि उसको हम एक साधन या एक माध्यम की तरह प्रयोग करें। मैं कहना चाहूँगी कि जीवन के जो विविध आयु वर्ग हैं उनमें हमारी प्राथमिकताएँ बदल जाती हैं। मैंने शुरुआत में कहा था कि जब एक बच्चा प्राथमिक स्तर पर विद्यालय आता है तो बच्चा विचारशील होने की तुलना में भावशील ज़्यादा होता है। लेकिन पूरा जीवन भावनाओं में नहीं बीतता। शुरुआती समय में बच्चे की भावनाओं से सम्पर्क स्थापित करना अध्यापक के लिए बहुत ज़रूरी होता है। इसलिए मैंने कहा था कि मातृभाषा को आधार बनाकर, साधन बनाकर मानक भाषा तक हमें जाना चाहिए। उदाहरण के लिए सर्विस लेन लेने के बाद हम हमेशा उसपर ही नहीं रहते। यह एक ज़रिया है हमें मुख्य सड़क तक लाने का। कभी न कभी हमें मुख्य सड़क पर आना होता है। इसी तरह से मातृभाषा एक ज़रिया है मानक भाषा तक लाने का। मानक भाषा का दायरा बहुत बड़ा या व्यापक है और मानक भाषा ही हमें हमारे मानव समाज के इतिहास से, हमारे समृद्ध अतीत से जोड़ती है। इस समय भी अगर हम किसी गूढ़ विषय पर बात कर रहे हैं तो हम में से कोई भी अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए अपनी मातृभाषा का प्रयोग नहीं कर रहा है और यह सम्भव भी नहीं है। यह ज़रूरी नहीं कि मेरी मातृभाषा से आप अवगत हों या आपकी मातृभाषा से मैं। हम यहाँ पर मानक भाषा का प्रयोग करके एक मुख्य विषय पर, एक ख़ास विषय पर विचार कर रहे हैं।

व्यापक दायरे वाली मानक भाषा ही हमें जीवन के उद्देश्यों और जीवन के उद्देश्यों की संप्राप्ति में सहायता करती है। यही हमें, हमारे समृद्ध इतिहास से जोड़ती है, हमारे समाज से जोड़ती है, जबकि मातृभाषा का दायरा एक छोटा दायरा है। मैं अगर अपने घर से बाहर निकलूँ तो मुझे ऐसे कम ही लोग मिलेंगे जो कि मेरी मातृभाषा से अवगत होंगे। परन्तु मानक भाषा के जानकार बहुत लोग मिल जाएँगे। मैंने एक पंक्ति पढ़ी थी कि शुरुआती वर्षों में बच्चा पढ़ने के लिए सीखता है, मतलब पढ़ना सीखता है और बाद में वह सीखने के लिए पढ़ता है। उच्च माध्यमिक कक्षाओं में वह सीखने के लिए पढ़ता है। पढ़ना सीखना विद्यार्थी के लिए महत्त्वपूर्ण है और उस समय उसकी मातृभाषा उसको मदद करेगी और बच्चा क्या पढ़ना सीख रहा है– मानक भाषा। मानक भाषा ही सभी विषयों की सफलता का एक साधन है।

बाद में जब विद्यार्थी अपने कुछ संप्रत्यय निर्धारित कर चुका होता है, कुछ सामान्यीकरण

(generalization) कर चुका होता है, बहुत चीज़ें सीख चुका होता है तब वह खुद को एक बड़े व्यापक समाज के समक्ष रखता है, अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है और तब निस्सन्देह उसको मानक भाषा का ही मार्ग चुनना पड़ेगा। इसलिए मैंने मानक भाषा को साध्य कहा है। एक व्यक्ति अगर अपने देश को छोड़कर विदेश भी जाता है तो वहाँ पर उसकी मातृभाषा की कोई कीमत नहीं है। वहाँ जाकर भी उसको मानक भाषा ही उस देश की अन्य भाषा को सीखने में भी मदद करेगी। अगर मैं बच्चे को हिन्दी से अँग्रेज़ी भाषा सिखाना चाहूँ तो अँग्रेज़ी के शब्दकोश में उसके अर्थ, मानक हिन्दी में लिखे हुए हैं। अगर हम मातृभाषा में शब्दों के अर्थ डालना चाहें तो वह सम्भव ही नहीं क्योंकि मातृभाषाएँ इतनी ज़्यादा हैं और सारी भाषाओं को शब्दकोश से जोड़ना सम्भव नहीं है। तो, मानक भाषा से जुड़कर ही बच्चा मुख्यधारा में आता है।

रजनी द्विवेदी : मैं चाहती हूँ कि आप भाषा शिक्षण के समन्वय करते हुए अपने कुछ ठोस उदाहरण भी रख सकें तो बेहतर होगा।

एक तरफ़ पाठ्यपुस्तक है जिसमें मानक भाषा है, दूसरी तरफ़ बच्चे का भाषा का जो सहज भण्डार है उसमें मातृभाषा अधिक होती है। आपने पहली कक्षा में भाषा सीखने-सिखाने का काम बच्चे के साथ शुरू किया, बच्चे के पास अभी उसकी मातृभाषा है। किस तरीक़े से आप उसको मानक भाषा सीखने में लेकर आते हैं? जैसे मातृभाषा मदद करती है, मातृभाषा एक साधन बनती है, तो कैसे बन जाती है? और फिर बच्चे भी बहुत सारे होते हैं, उन सबको कैसे मौक़ा देते हैं आप?

नीतू पांचाल : हमने जो शुरुआत में सेतु बनाने वाली बात कही थी तो उसमें सेतु इस तरह से बन रहा है कि बच्चा हमें अप्रोच कर रहा है। बच्चे को पाठ्यचर्या से कोई मतलब नहीं है, बच्चे को पाठ्यपुस्तक से कोई मतलब नहीं है, बच्चा टीचर को अप्रोच कर रहा है और टीचर एक तरह से यहाँ पर दुभाषिये (Interpreter) का काम कर रही है। टीचर उस पाठ्यक्रम को बच्चे की मातृभाषा को ध्यान में रखते हुए, समझाते हुए, कोशिश करती है कि बच्चे की सहज भाषा में उस विषय को बच्चे तक सम्पातदित कर सके। तो इस तरह से समन्वय स्थापित करने का मतलब सिर्फ़ दो भाषाओं में समन्वय स्थापित करना नहीं, समन्वय का मतलब यह भी है कि बच्चे की अनुभूतियों को समझना और फिर उन अनुभूतियों को ध्यान में रखते हुए हमें आगे उनको पाठ्यक्रम के बारे में जानकारी देनी चाहिए।

रजनी द्विवेदी : व्याख्या (Interpret) करने का मतलब क्या यही है कि, आपने कहा उसको लिखने के लिए तो उसने 'डिलेवर' लिख दिया। आपने कहा, हाँ यह ठीक है। अगली बार जब वह लिखेगा तो आपकी कोशिश रहेगी धीरे-धीरे उसको 'ड्राइवर' के तरफ़ लेकर जाना। लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि एक ही शब्द है, हर बच्चे के पास में अपने-अपने शब्द हो सकते हैं। क्या आप उसको यह आज़ादी देंगे कि वह अपने-अपने शब्द लिखे?

अमित प्रकाश : हाँ, मैं उसको यह आज़ादी देना चाहूँगा क्योंकि अगर मेरा लक्ष्य है बच्चे को चलना सिखाना, तो यह करना होगा। अगर मैं पहले ही नियम तय कर दूँ कि आपको इस दिशा में और ऐसे चलना है जबकि बच्चा अभी घुटनों के बल ही रेंग रहा है, तो क्या यह हो पाएगा? मेरा उद्देश्य है उसको अपने पैरों के बल चलना सिखाना लेकिन अगर पहले से ही नियमबद्ध तरीके से मैं कहूँ कि आपको बाईं तरफ़ चलना है या सीधे चलना है तो बच्चे के लिए बड़ा मुश्किल होगा। पहले मैं उसे खड़ा होना सिखाऊँगा, फिर मैं उसे एक-दो क़दम रखना सिखाऊँगा और जब वह चलने लायक हो जाएगा तब मैं उसे नियमों की जानकारी दूँगा।

अंशु कुमारी : यहाँ एक कविता भी मैं बताना चाहूँगी— चन्दा के गाँव में,

पीपल की छाँव में,

हम सैर करने जाएँगे,
हम सैर करके आएँगे।

यह कविता कक्षा एक और दो के बच्चों के लिए है। जैसे आपने अभी बोला कि उसको नया शब्द सीखना है तो आप इसे कैसे करेंगे। यह कविता पाठ्यपुस्तक में है। इस कविता में उसकी मातृभाषा से सम्बन्धित शब्द आएँगे तो उसमें से हम बच्चों से पूछ सकते हैं। जैसे चन्दा के गाँव में, तो 'चन्दा क्या है' बच्चों से पूछेंगे, बच्चों से इस बारे में बातचीत करेंगे तो कोई बताएगा 'चाँद' होता है। अगर नहीं पता है तो वह हम उसे इस सम्बन्ध में बता देंगे। वह शब्द उसकी मातृभाषा से मानक भाषा तक जाएँगे कि इनको चन्द्रमा भी बोलते हैं, चन्दा भी कहते हैं, कहीं पर चाँद भी बोलते हैं। तो कविता, कहानियाँ बच्चों के स्तर के अनुसार होती हैं और वह इसमें बहुत रुचि लेते हैं और बहुत जल्दी इसको सीखते हैं। फिर इस चीज़ से हम उनको मानक भाषा पर ला सकते हैं। मैंने कक्षा में यह गतिविधि करवाई है।

नीतू पांचाल : एनसीएफ 2005 में भी यह ज़िक्र किया गया है कि यदि बच्चा अपने कक्षा कक्ष के वातावरण में मौखिक या लिखित किसी भी रूप में अपनी मातृभाषा के शब्दों का उपयोग करता है तो वह ठीक है लेकिन कुछ शिक्षक यह मानते हैं कि मानक भाषा के लिहाज़ से यह अशुद्ध है। और वे उसके नम्बर भी काट देते हैं या बच्चे को बोल देते हैं ऐसे नहीं, ऐसे बोलो। यह ग़लत है। अगर बच्चा मौखिक या लिखित किसी भी रूप में अपनी मातृभाषा के शब्दों का प्रयोग कर रहा है, तो एक शिक्षक के रूप में हम उसको सही मानें और उसके अंक भी ना काटें, बल्कि उसको बढ़ावा दें। पहली जो मुख्य शर्त है वह है– प्राथमिक स्तर पर अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता। बच्चा ख़ुद को अभिव्यक्त करना तो सीखे। अगर हम उसको पहले ही क़दम पर व्याकरणिक दृष्टि से, सही या ग़लत की दृष्टि से रोक देंगे या टोंक देंगे, तो बच्चा अभिव्यक्ति के लिए अगली बार आगे नहीं आएगा। तो हमारा पहला क़दम है अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, वह चाहे ग़लत हो या सही। बच्चा बोलना सीखे, अभिव्यक्त करना सीखे और अपने विचारों को रखना सीखे। उसको यह भी पता होना चाहिए कि मेरे विचारों का मेरी कक्षा में और मेरे शिक्षकों द्वारा सम्मान किया जा रहा है। यहाँ पर भी टीचर इस तरह से समन्वय स्थापित कर रहा है। बच्चे को एक स्वतन्त्रता प्रदान कर रहा है, उसको शुद्धता और अशुद्धता के दायरे में न बाँधकर, मानक भाषा के व्याकरणिक नियमों में न बाँधकर, उसको अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित कर रहा है।

हृदयकान्त दीवान : यह जो 'समन्वय' शब्द है यह मुझे समझ नहीं आता है और यह भी नहीं समझ में आया कि मातृभाषा का कक्षा में उपयोग कैसे होगा? मान लीजिए कि किसी स्कूल में विस्थापित बच्चे हैं, कोई उड़ीसा से है, कोई बंगाल से है, कोई बिहार से है, बिहार में भी कई ज़िले हैं तो फिर आप बच्चे की मातृभाषाओं से समन्वय कैसे करेंगे? इतनी सारी भाषाओं के लिए आप कक्षा में कैसे जगह बना पाएँगे? कौन-सी कक्षा तक आपको लगता है कि यह जगह होनी चाहिए?

नीतू पांचाल : इतनी सारी मातृभाषाएँ हैं तो यहाँ पर एक शिक्षक का पहला कर्त्तव्य है कि वह अपनी मानसिकता खुली रखे। बच्चे भी जब कक्षा कक्ष के वातावरण में आते हैं तो बहुत सारे शब्द ऐसे नहीं होते हैं जो शिक्षक नहीं समझ पाता। मातृभाषा के भी काफ़ी शब्द ऐसे होते हैं जो हम भी प्रयोग के आधार पर समझ लेते हैं। पर ऐसे भी हो सकते हैं जिनके बारे में शिक्षक को पता नहीं होता। जैसे मेरी कक्षा में एक बच्चा था, उसने मुझे आकर बोला कि मेरे टे विच पीड़ हो रही है। अब मुझे समझ नहीं आया। मैंने कक्षा के ही एक दूसरे बच्चे की मदद से इसे समझा। यहाँ मैंने भी कुछ नया सीखा तो एक शिक्षक के रूप में हमें भी एक अधिगमकर्ता बने रहना चाहिए।

हृदयकान्त दीवान : यह बात समझ आ गई कि अगर बच्चा कुछ कहे तो शिक्षक भी उसको

समझ लें। पर कक्षा में तो हमें किताब का पाठ ही पढ़ाना है, वही हमारा उद्देश्य है। लेकिन आपने तो बच्चे की पहचान, अस्तित्व, अस्मिता की बात कही थी, तो क्या ऐसा है कि इनको छोड़ दें और दूसरी भाषा पकड़ लें, क्या आप ऐसा चाहते हैं?

अमित प्रकाश : जैसे भाषा का अर्थ है 'संप्रेषण'। बच्चे ने इशारे से, अपनी भाषा में समझाया कि पेट में दर्द है। तो पहली बात है कि अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। दूसरी बात कि कक्षा में बहुभाषिता का वातावरण है। मेरी कक्षा में हरियाणवी बच्चे हैं। वे लड़की के लिए 'छोरी' शब्द का प्रयोग करते हैं। मध्य प्रदेश के बच्चे लड़की के लिए 'मोड़ी' शब्द का प्रयोग करते हैं। अन्य भाषा में इसके लिए और शब्द हो सकते हैं। तो मैं ऐसा करूँगा कि इन सभी शब्दों को बोर्ड पर लिखूँगा, तब सभी बच्चे इससे लाभान्वित हो पाएँगे। मेरे अनुसार एक भाषा को छोड़कर दूसरी को पकड़ लिया जाए, यह सम्भव ही नहीं है। मेरे अनुसार मातृभाषा को कभी व्यक्ति छोड़ ही नहीं पाता है। मैं अपने बारे में अगर बात करूँ, मानक भाषा मुझे अच्छे से आ गई है, नियमों का मुझे अच्छे से पता चल गया है, मैं जानता हूँ कि मातृभाषा अशुद्ध है। लेकिन जब कभी मेरे गाँव की चौपाल पर मैं बैठूँगा, जहाँ पर मातृभाषा आज भी बोली जाती है तो मैं मानक भाषा का प्रयोग नहीं करूँगा। आज भी मेरे गाँव में जब मेरे परिवार के बड़े-बूढ़े आएँगे जो मातृभाषा का प्रयोग करते आ रहे हैं तो मैं उनके साथ मातृभाषा में ही अपनी अभिव्यक्ति करके प्रसन्नता महसूस करूँगा। ऐसा नहीं है कि मुझे मानक भाषा का ज्ञान हो गया है तो मैं मातृभाषा को कहीं पीछे छोड़ आया हूँ। यह मेरे लिए सम्भव नहीं है।

हृदयकान्त दीवान : क्या मातृभाषा अशुद्ध है?

नीतू पांचाल : मातृभाषा को अशुद्ध नहीं कहा जा सकता। अगर मानक भाषा की दृष्टि से देखा जाए तो वह अशुद्ध है।

अमित प्रकाश : क्योंकि यह नियमों में बँधी नहीं है। व्याकरणिक नहीं है।

नीतू पांचाल : मातृभाषा में भाषा भी हो सकती है, बोली भी हो सकती है।

हृदयकान्त दीवान : पंजाबी है, हरियाणवी है वह क्या हैं?

नीतू पांचाल : पंजाबी मानक है, हिन्दी भी मानक भाषा है और हरियाणवी बोली है। बोली लिपिबद्ध नहीं है, वह भाषा का ही एक क्षेत्रीय रूप होता है। राजस्थानी भी हिन्दी की एक बोली है, हरियाणवी भी हिन्दी की एक बोली है, अलग-अलग क्षेत्र के लोग प्रयोग के आधार पर शब्दों को अलग रूप दे देते हैं जिसे खड़ी बोली कहते हैं। जैसे एक शब्द है भीतर, हरियाणवी में उसको बोलेंगे भीत्तर, तो थोड़ा-सा रूप बदल गया। बोली का अलग-से अपना रूप होता है, उसका व्याकरण नहीं होता, भाषा का अपना एक व्याकरण होता है। यह फ़र्क़ है।

हृदयकान्त दीवान : इसका मतलब हिन्दी भोजपुरी से पुरानी है, या फिर हिन्दी पहले थी फिर उससे राजस्थानी, हरियाणवी, भोजपुरी बनीं और मानक भाषा से ही यह सब बोलियाँ बनीं जिसको हम बदल-बदलकर बोल रहे हैं।

नीतू पांचाल : इसको आप पहले या बाद में नहीं कह सकते हैं। भाषा नदी के समान होती है जैसे नदी कंकर-पत्थरों को अपने साथ बहा ले जाती है, तो हिन्दी को भी हम यह नहीं कह सकते कि उसका जो रूप आज है, आज से 50 साल पहले भी हिन्दी का वही रूप था। क्योंकि उसमें भी अन्य भाषाओं के शब्द मिलते-जुलते रहते हैं, जैसे हिन्दी में उर्दू के बहुत से शब्द हैं, अँग्रेज़ी के बहुत सारे शब्द शामिल हो गए हैं। तो हम इसे नई या पुरानी नहीं कह सकते।

हृदयकान्त दीवान : नहीं, मगर हम यह नहीं कहते कि उर्दू, हिन्दी की बोली है। लेकिन जब हम यह कहते हैं कि हरियाणवी हिन्दी की बोली है, भोजपुरी हिन्दी की बोली है, हिमाचली

हिन्दी की बोली है तो कुछ तो तर्क होगा जिनके आधार पर हम यह कह रहे हैं।

नीतू पांचाल : क्योंकि इन बोलियों में हिन्दी भाषा के अधिकतर शब्द देखने को मिलते हैं बजाय पंजाबी के या उर्दू के जो कि मानक भाषाएँ हैं। उनके शब्दों को अगर हम देखें तो उसमें हिन्दी भाषा के ज़्यादा शब्द हैं, इसलिए उनको हिन्दी की बोली कहा जाता है।

अमित प्रकाश : मुझे नहीं लगता कि हिन्दी पहले थी फिर प्रादेशिक भाषाएँ आईं। मुझे लगता है कि प्रादेशिक भाषा पहले थी, उसका संवर्धन होकर हिन्दी बनी होगी। मैं आपको इसका कोई प्रमाण तो नहीं दे सकता। लेकिन मुझे ऐसे लगता है कि पहले प्रादेशिक भाषाएँ थीं उनका संवर्धन होकर फिर एक मौलिक भाषा बनी।

नीतू पांचाल : मैं एक चीज़ और कहना चाहूँगी कि मानक भाषा होती क्या है? किसी भाषा के बहुत सारे प्रचलित रूपों में से किसी एक रूप को सर्वसम्मति के आधार पर सर्वमान्य रूप दे दिया जाता है वह मानक भाषा कहलाती है। यह फिर व्याकरण व शब्दकोश में भी आ जाता है।

हृदयकान्त दीवान : क्या आपको लगता है मैथिली, भोजपुरी, हरियाणवी, राजस्थानी का कोई व्याकरण नहीं है और मैं किसी भी नियम का इस्तेमाल करके हरियाणवी, राजस्थानी बोल सकता हूँ?

नीतू पांचाल : मैथिली भाषा के बारे में तो मैं ज़्यादा नहीं जानती लेकिन हरियाणवी का कोई व्याकरण नहीं है। बोलियाँ व्याकरण आधारित नहीं, प्रयोग आधारित होती हैं। बोलियाँ प्रयोग से ही प्रचलन में आती हैं। लेकिन नियम तो हमारी समझ में होते ही हैं तो हरियाणवी के लिए आपको हरियाणवी के नियम तो समझने होंगे ही।

हृदयकान्त दीवान : पहले प्रश्न का उत्तर तो पूरी तरह समझ में नहीं आया। अब दो बातें और बताएँ, कि अगर एक बच्चे के पास कई भाषाएँ हैं उसमें हम उसकी मातृभाषा को क्या समझेंगे? कक्षा के सन्दर्भ में एक टीचर के रूप में हम बात करें तो किसको उसकी मातृभाषा समझेंगे?

अमित प्रकाश : जिन शब्दों का वह अधिकतर प्रयोग करता है और जिन शब्दों के प्रयोग में उसे सहजता महसूस होती है उसको मैं उसकी मातृभाषा मानूँगा।

नीतू पांचाल : इसके लिए एक कहावत है कि किसी को जब चोट मारी गई और क्रोध में या भावावेश में उसके मुँह से जो भाषा निकलती है वही उसकी मातृभाषा होगी।

हृदयकान्त दीवान : यह बात की थी कि अगर एक ही भाषा में हम बात करेंगे तो अच्छा है, उससे ज्ञान का संवर्धन होता है। इस बात को अगर थोड़ा आगे बढ़ाएँ तो फिर पूरे विश्व के लिए एक ही भाषा होनी चाहिए।

नीतू पांचाल : मानक भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है, उसको जानने-समझने वाले लोग ज़्यादा है। इसलिए ही अँग्रेज़ी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है।

हृदयकान्त दीवान : इसका मतलब यह है कि हमें हिन्दी छोड़कर अँग्रेज़ी बोलना चाहिए?

नीतू पांचाल : यह प्रयोग पर आधारित होता है। यहाँ मैं अपने देश में अगर अँग्रेज़ी बोलने लग जाऊँ तो बहुत लोगों के लिए सहज नहीं है। जैसे कि मैंने कहा था कि उम्र के हिसाब से प्राथमिकताएँ बदलती हैं उसी प्रकार से क्षेत्र के हिसाब से भी प्राथमिकताएँ बदलती हैं। अगर मैं हरियाणा जाऊँगी और मानक हिन्दी वहाँ पर बोलूँगी तो किसी को नहीं समझ में आएगी। और तब भी मैं हिन्दी का प्रयोग करूँगी तो मैं मूर्ख कहलाऊँगी, अतः यह चीज़ें प्रयोग आधारित होती हैं। व्यवहार समय, स्थान, स्थिति, परिवेश देखकर हमें यह चीज़ें करनी चाहिए।

हृदयकान्त दीवान— इस हिसाब से तो हरियाणा में हरियाणवी पढ़ाई जानी चाहिए।

हिन्दी क्यों पढ़ाएँ?

अमित प्रकाश : मेरा मानना है कि हरियाणा में आप हरियाणवी पढ़ा सकते हैं क्योंकि वह क्षेत्रीय भाषा है, संप्रेषण का साधन है। मुझे आपसे मतलब है, आपको मुझसे मतलब है जब हम एक ही परिवेश में रहते हैं। समस्या तब आती है जब मैं उनके पास चला जाता हूँ जो कि बंगाली बोलते हैं। अब ना वह मेरी भाषा से परिचित हैं न मैं उनकी भाषा से परिचित हूँ। तो तब कहीं बीच में समन्वय की बात आती है कि कुछ ऐसा ढूँढ़ा जाए जो दोनों ही समझ पाएँ। यह समन्वय है।

हृदयकान्त दीवान : बहुत सारे बंगाली दिल्ली में रहते हैं और उनके आस-पास के लोग कुछ बंगाली सीख जाते हैं। अगर एक हरियाणवी हो, एक बंगाली हो तो क्यूँ एक नई भाषा चाहिए? हरियाणवी और बंगाली का मिश्रण बनाकर भी तो बात कर सकते हैं। इसमें क्या समस्या है?

नीतू पांचाल : ऐसा सिर्फ़ तब होगा जब दो ही भाषाओं के लोग हैं। मैं एक कवि सम्मेलन में गई वहाँ पर सभी भाषाओं के लोग हैं तो मैं कौन-सी भाषा का प्रयोग करके उनको कविता सुनाऊँ। तो अगर सिर्फ़ बंगाली या हरियाणवी है तो मिला करके काम हो जाएगा। लेकिन एक व्यापक क्षेत्र या बड़े समूह के लिए मानक भाषा की मदद लेनी पड़ती है।

रजनी द्विवेदी— संविधान में 22 मानक भाषाएँ हैं। पहले 14 थीं, फिर 17-18 हुईं, बाद में 22 हुईं। यह कैसे हो गया कि पहले कम भाषाएँ थीं, अब बढ़ गईं? तो ऐसा नहीं हो सकता कि 50 भाषाएँ मानक हो जाएँ, या ऐसा होना चाहिए कि एक ही भाषा मानक हो? यह मानक माने जाने के क्या आधार हैं?

नीतू पांचाल : किसी भी चीज़ के लिए कोई एक कारण ज़िम्मेदार नहीं होता, बहुत से कारण होते हैं। हमारे देश में मानक/अमानक निर्धारित करने का एक सबसे बड़ा कारण राजनीतिक रहा है। अभी पाठ्यपुस्तक में बहुत बड़े बदलावों के बारे में बातचीत हो रही है, क्यों? क्योंकि राजनीति बदल गई। यही चीज़ कहीं न कहीं भाषाओं पर भी असर डालती है। राज्य, राजनीतिक रूप से या हम कहें कि जिसकी चल रही है वह अपनी भाषा को मान्यता दिलाने की कोशिश करते हैं। इसके अलावा भाषा का क्षेत्र भी शायद बड़ा होगा इसलिए मातृभाषाओं की संख्या भी ज़्यादा बढ़ गई है। लेकिन राजनीतिक कारणों को मैं ज़्यादा ज़िम्मेदार मानना चाहूँगी।

अमित प्रकाश : धीरे-धीरे संविधान में मानक भाषाओं की संख्या बढ़ रही है। इसका कारण यही होगा कि कहीं न कहीं उन भाषाओं का प्रचलन अधिक होगा। वह ज़्यादा बड़े भू-भाग पर, ज़्यादा लोगों द्वारा बोली जाती होंगी। नीतू द्वारा कही बात से भी मैं ताल्लुक रखता हूँ कि अपने आप को श्रेष्ठ साबित करने के लिए मैं कुछ भी करूँगा। अब क्योंकि अगर मैं सत्ता में हूँ या मेरे पास ऐसे तरीक़े हैं कि मैं उस चीज़ को मानक भाषा के दायरे में ला सकता हूँ तो मैं ज़रूर कोशिश करूँगा। हरियाणवी मैं नहीं ला पाया क्योंकि मुझमें उतनी श्रेष्ठता नहीं है या मैं उस पद पर नहीं हूँ कि मैं उस भाषा को भी मानक भाषा के दायरे मैं ला पाऊँ। अन्यथा मैं ज़रूर कोशिश करूँगा।

अंशु कुमारी : भाषा हमें सामाजिक, सांस्कृतिक पहचान दिलाती है। उसके आधार पर भी हमें यह तय करना चाहिए।

हृदयकान्त दीवान : आप कह रहे थे कि हरियाणवी में व्याकरण नहीं है तो फिर कैसे आप उसको मानक बना देंगे?

अमित प्रकाश : पहले किसी भी भाषा का व्याकरण नहीं था। जैसे-जैसे समर्थन करते गए वैसे-वैसे व्याकरण के नियम-क़ानून तय किए, तो व्याकरण बनाने वाले भी हम लोग ही हैं। ऐसा नहीं होता है कि व्याकरण नहीं होती, व्याकरण बनाई जा सकती है।

हृदयकान्त दीवान : बहुत बार कहा गया कि बच्चे को अपनी मातृभाषा का इस्तेमाल करना

चाहिए। अगर बच्चा चौथी कक्षा में आ गया है और उसको आपने कहा कि एक विवरण लिखो। उस विवरण में उसने अपनी मातृभाषा के शब्द भी डाल दिए। आपको क्या लगता है कि वह शब्द डालने चाहिए या नहीं डालने चाहिए या आप कब तक उसको इन शब्दों के प्रयोग की मंज़ूरी देंगे? क्या वह जो विवरण लिख रहा है उससे उसकी भाषा समृद्ध हो रही है या वह ग़लती है?

अमित प्रकाश : प्राथमिक स्तर की पहली कक्षा में आने वाले बच्चे के पास पहले से ही अपनी मातृभाषा के शब्दों का भण्डार होता है। मैंने उसे अभिव्यक्ति की आज़ादी दी। वह दूसरी कक्षा में आ गया, कुछ नए शब्दों से परिचित हुआ। कुछ उसने परिवर्तित कर लिए और कुछ शब्दी वह ऐसे ही लिखता रहा। उसके बाद तीसरी। लेकिन मैं पाँचवी तक आते-आते उसको इनके प्रयोग की मंज़ूरी नहीं दूँगा। उसको यह समझा दूँगा कि उसकी मातृभाषा और मानक रूप में यह अन्तर है और बताऊँगा कि मानक रूप में इस तरह से प्रयोग किया जाता है, लिखा जाता है। पाँचवीं तक आते-आते मैं उसको मानक भाषा के शुद्ध रूप से परिचित करा दूँगा। ताकि छठवीं से वह मानक भाषा को ज़्यादा उपयोग में ला सके।

नीतू पांचाल : मेरा मानना है कि चौथी या पाँचवीं में आने के बाद भी अगर बच्चा प्रादेशिक भाषा का ज़्यादा उपयोग करता है तो वह ग़लत नहीं है क्योंकि कहीं न कहीं वह भाषा को समृद्ध कर रहा है। मैंने पहले भी कहा था कि हिन्दी बहुत सारी भाषाओँ का मिला-जुला रूप है और हिन्दी ख़ुद में ही उर्दू का शब्द है अतः हम यह नहीं कह सकते कि यह हिन्दी नहीं है। हमें व्याकरण के नियमों पर और हिन्दी के लिए जो वाक्य निर्माण के नियम निर्धारित किए गए हैं उस पर ध्यान देना है। अगर बच्चा हिन्दी में अपने विचारों को अभिव्यक्त कर रहा है तो कम से कम उन नियमों का ध्यान रखे। वह अन्य भाषाओं के शब्द भी ले सकता है लेकिन उनकी वर्तनी शुद्ध होनी चाहिए, उसका लिखित रूप शुद्ध होना चाहिए और व्याकरण के नियमों का पालन करना चाहिए। इस समय हमारी जो पाठ्यपुस्तकें हैं उसमें भी प्रादेशिक भाषा के बहुत सारे शब्दों को समावेशित किया गया है, ताकि उनको भी बढ़ावा मिले।

अंशु कुमारी : अगर चौथी का बच्चा भी अपनी मातृभाषा में लिख रहा है तो हम उसे नकार नहीं सकते। यह नहीं कह सकते कि मानक या शुद्ध रूप करके उसको लिखो। हमने लिखने के लिए बोला उसने हमें लिखकर दे दिया। उसने अपने विचार अभिव्यक्त कर दिए और हमें यह करने देना चाहिए। लेकिन टीचर के रूप में हमारा रोल फिर से वही आता है कि उसको बताना, उसका मार्गदर्शन करना, उसको प्रेरित करना कि इसके स्थान पर आप इस तरह से इसका उपयोग कर सकते हैं। इस तरह से हमें बच्चे को मातृभाषा से मानक भाषा की ओर ले जाना चाहिए।

हृदयकान्त दीवान : कक्षा पाँचवीं का बच्चा पढ़ने के लिए तैयार है या वह अभी पढ़ना सीख रहा है। आपको क्या लगता है कि पढ़ना क्या है और समझकर पढ़ना क्या है? और क्या पाँचवीं का बच्चा पढ़ने लग जाता है?

नीतू पांचाल : पढ़कर समझना, हम नहीं कह सकते हैं कि हमारे बच्चे उतने सक्षम हैं। मैंने बच्चे को एक अपठित गद्यांश पढ़ने के लिए दिया और कहा कि इस गद्यांश का सार लिखिए या इसको अपने शब्दों में बताइए या इसके किसी वाक्य को आप अपनी मातृभाषा में बदलिए। अगर बच्चा यह कर पा रहा है तो हम कह सकते हैं कि हाँ बच्चा उस भाषा से बहुत अच्छे-से परिचित हो गया है और उसका ज्ञान बच्चे को हो गया है। इस स्तर पर हमारे बच्चे अभी पीछे हैं।

अमित प्रकाश : मेरी कक्षा के बच्चे पढ़ रहे हैं। केवल शब्द पढ़ने से ही ज्ञान नहीं आता। कोई बच्चा किसी चीज़ को पढ़कर उसपर

आपसे सवाल पूछ रहा है, तो इसका मतलब है कि वह पढ़ रहा है। उन्होंने मुझसे पूछा, कौतूहल क्या होता है? या इस तरह के दूसरे शब्दों को पकड़कर जब वह आपके पास लेकर आते हैं, तो वह पढ़ने में सक्षम हैं। जब वह किसी चीज़ के बारे में सवाल कर रहे हैं तो इसका मतलब है कि वह पढ़ रहे हैं तो मेरी कक्षा के 90% बच्चे पढ़ रहे हैं।

हृदयकान्त दीवान : कक्षा छठवीं, सातवीं और आठवीं में फिर भाषा में क्या सिखाना चाहिए? पढ़ना तो सीख गए वह। क्या इन कक्षाओं में बच्चे को और आगे ज़्यादा पढ़ना सीखने का प्रशिक्षण देने की ज़रूरत होगी? अब उन्हें भाषा का ज्ञान क्यों देना चाहिए?

नीतू पांचाल : इन कक्षाओं में पढ़ना सीखने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए, अगर उसकी बुनियाद अच्छी है तो। पर भाषा का दायरा भी बहुत बड़ा है, इसमें बहुत सारी विधाएँ हैं। हम यह नहीं कह सकते कि वह पढ़ना सीख गया तो काफ़ी है। भाषा की समझ विकसित हो गई तो बच्चे के अन्दर सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना है, कल्पनाशीलता का विकास करना है कि बच्चा ख़ुद भी अपने आप नाटक लिख सके, कविताएँ लिख सके, उसको अभिव्यक्ति का बोध हम उस समय देंगे।

हृदयकान्त दीवान : मतलब यह कि पाँचवीं तक वह पढ़ना सीख जाए, उसके बाद लिखने में इस्तेमाल करने का अभ्यास उसको ज़्यादा मिलना चाहिए।

नीतू पांचाल : हाँ इस्तेमाल करने का भी और अगली कक्षा में जाने के बाद भाषा अन्य विषयों को भी पढ़ने में सहायता देती है।

रजनी द्विवेदी : यह बच्चे जो पढ़ना सीख गए हैं, क्या वह गणित की किताब, विज्ञान की किताब भी पढ़कर समझ लेंगे?

नीतू पांचाल : अलग-अलग क्लास में पढ़ना सीख चुके बच्चों का अनुपात अलग-अलग हो सकता है। जैसे मेरी क्लास में ऐसे बच्चे बहुत कम हैं। मुझे पिछले साल ही यह कक्षा मिली है और उसके बहुत सारे कारण हैं, उस पर मैं अभी चर्चा नहीं करना चाहूँगी। हो सकता है सर शुरुआत से ही एक ही कक्षा के साथ काम कर रहे हों। यह एक बहुत बड़ा कारण है।

हृदयकान्त दीवान : आपके कारण क्या हैं? जैसे बाक़ी साथियों ने पढ़ाया ही नहीं, यह कारण है या कोई और कारण हैं?

नीतू पांचाल : यह कारण भी होते हैं और एक और कारण है; नीतिगत कारण। जैसे आजकल 10 साल का बच्चा अगर यह आकर कहे कि मुझे कक्षा पाँच में प्रवेश लेना है तो हम उसको मना नहीं कर सकते। बच्चा अगर प्रथम पीढ़ी का शिक्षार्थी है, उसके परिवार में भी कोई अगर स्कूल नहीं गया है और वह 10 साल की उम्र में आता है, तो उसे मना नहीं किया जा सकता है। तो, यह भी एक बड़ा कारण है। दूसरा कारण जैसे हमारे स्कूल में मान लीजिए कि कोई बच्चा 6 महीने अनुपस्थित हो गया या मान लीजिए कि शिक्षक ने रुचि से नहीं पढ़ाया तो क्लास की जो नियमितता है उसपर सीधे असर पड़ता है। अगर 10 बच्चे भी ऐसे हैं जो नियमित रूप से अनुपस्थिंत रहने शुरू हो गए हैं या जो लम्बे। अर्से से नहीं आ रहे हैं तो वह उस स्त र तक पहुँच ही नहीं पाएँगे। तो, सभी कारण एक-दूसरे से जुड़े हैं, किसी एक कारण को ज़िम्मेदार नहीं ठहरा सकते।

हृदयकान्त दीवान : आप लोग कितने साल से पढ़ा रहे हैं और क्या-क्या विषय पढ़ाते हैं?

अमित प्रकाश : नीतू जी का 15 साल का अनुभव है, अंशु जी का 6 साल का और मेरा (अमित प्रकाश) 10 साल का अनुभव है। और हम सभी विषयों को पढ़ाते हैं।

हृदयकान्त दीवान : क्या आप विज्ञान की कक्षा में भी भाषा के बारे में कुछ बात करते हैं या नहीं। सवाल यह है कि संज्ञान देते हुए अगर आप इस बारे में कुछ करती हैं तो क्या

करती हैं?

अमित प्रकाश : मेरा वर्ग अँग्रेज़ी माध्य म का है। लेकिन बच्चे अभिव्यक्त करने में इतने सक्षम नहीं है, तो पढ़ाना मुझे हिन्दी में ही पड़ता है। हिन्दी में समझाते हुए अनुवाद करना पड़ता है।

हृदयकान्त दीवान : विज्ञान की कक्षा में क्या भाषा का कुछ अभ्यास रहता है?

नीतू पांचाल— भाषा को किसी भी चीज़ से अलग कर ही नहीं सकते। जैसा कि पहले कहा था कि विषयों को एकीकृत करके पढ़ाते हैं, सीखने-सिखाने की समेकित अप्रोच के तहत। मैं सिर्फ़ विज्ञान ही नहीं पढ़ा रही हूँ, उस समय गणित से सम्बन्धित कोई चीज़ आती है या गणित का कोई प्रकरण जुड़ सकता है या भाषा का प्रकरण जुड़ सकता है तो वह भी पढ़ाऊँगी। जैसे मैंने प्रकाश संश्लेषण बताया तो उसका इंग्लिश अर्थ मैं बच्चे को बता सकती हूँ। प्राथमिक स्तर पर यह बहुत अच्छी बात है कि चीज़ों को बाँधा नहीं गया है। जो नीतिगत विषय हम बात कर रहे थे उसमें यह एक छूट भी है कि हम बच्चे को अपने तरीक़े से पढ़ा सकते हैं। अपने ढंग से उसे पाठ्यक्रम की तरफ़ ले जा सकते हैं।

अंशु कुमारी : कक्षा तीसरी, चौथी, पाँचवीं की वर्तमान पाठ्यपुस्तकें भी इस तरह की हैं जैसे, पर्यावरण की पुस्तक के अध्याय में जानकारी ही नहीं बल्कि कविताएँ भी दी गई हैं— 'आलू, मिर्ची, चायजी, कौन कहाँ से आएजी', इसी तरह सब्ज़ियों के नाम कहाँ से आए, देशों के नाम, देशों का भूगोल आदि है। और माध्यम की भी कोई बन्दिश नहीं है, न शिक्षक पर न ही विद्यार्थी पर। सब्ज़ियों के नाम हिन्दी में आए और आप हिन्दी में लिखकर आ गए, आप उन्हें अँग्रेज़ी में लिख दो। तो आप हिन्दी-अँग्रेज़ी दोनों भाषाओं का साथ भी प्रयोग कर सकते हो। मेरा मानना है कि इससे बच्चे को भी सीखने में सहजता रहती है। बच्चे की मातृभाषा के बाद हिन्दी उसकी दूसरी भाषा है तो उससे उसको अँग्रेज़ी सीखने में, और बहुभाषिता प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

नीतू पांचाल : मैं एक बिन्दु और जोड़ना चाहूँगी। सीखने-सिखाने में एक और कारण है— अध्यापकों की ख़ुद की रुचि और ख़ुद के विषय। यह भी एक बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं। मेरे विज्ञान की तुलना में सर का विज्ञान बहुत अच्छा है, तो शिक्षक की रुचियाँ बच्चों पर बहुत प्रभाव डालती हैं। मैंने देखा है कि सर के बच्चे विज्ञान में बहुत अच्छे हैं। इसी प्रकार जिस शिक्षक की अँग्रेज़ी बहुत अच्छी होगी उनके बच्चे अँग्रेज़ी में बहुत अच्छे होंगे, जिस टीचर का गणित बहुत अच्छा होगा उनके बच्चे गणित में बहुत अच्छे होंगे, जिसकी हिन्दी बहुत अच्छी होगी उनके बच्चे हिन्दी व्याकरणिक रूप से बहुत अच्छे से लिखेंगे। शिक्षक की रुचि का प्रभाव बच्चों पर पड़ेगा ही।

हृदयकान्त दीवान : आपने कहा था भाषा और विज्ञान में सम्बन्ध है तो आप समझाएँगे कि भाषा और विज्ञान का क्या सम्बन्ध है? एक बात समझ में आनी चाहिए कि किसी भाषा में अगर व्याकरण नहीं है, तो आप जो बोल रहे हैं वह कोई नहीं समझ सकता। हरियाणवी में भी वह सारे नियम हैं जो हिन्दी में हैं। और जिस समय हिन्दी को मैथिली या भोजपुरी के ऊपर प्राथमिकता दी गई, उस समय भोजपुरी और मैथिली बोलने वाले हिन्दी से ज़्यादा थे, उनका साहित्य भी शायद हिन्दी से ज़्यादा समृद्ध था। मैं दो चीज़ें कह रहा हूँ। हिन्दी का व्याकरण लिखा गया और लिपिबद्ध हुआ। व्याकरण तो किसी भी भाषा का बनाया जा सकता है और व्याकरण तो कभी भी बन सकता है, व्याकरण बनाने वाले तो हम ही लोग हैं। बोलते-बोलते नए वाक्य बना लेते हैं और यह सारे वाक्य जो हम बनाते हैं या बना सकते हैं नियमबद्ध हैं। हरियाणवी का व्याकरण तो कब से बन चुका है, लेकिन मैं उन नियमों का उपयोग करना नहीं जानता। अगर मैं हरियाणा में जाकर हरियाणवी बोलने लगूँगा तो लोग मेरा मज़ाक उड़ाने लग जाएँगे। सबको पता

चल जाएगा कि मेरी हरियाणवी का व्याकरण सही नहीं है।

नीतू पांचाल : कुछ चीज़ें समझ पर आधारित भी होती हैं। हमारे देश का संविधान सबसे बड़ा लिखित संविधान है। लेकिन ब्रिटेन का जो संविधान है वह लिखित नहीं है, वह लचीला संविधान है। वहाँ लिखित में नहीं है लेकिन नियम तो वहाँ भी चल रहे हैं। हमारे देश का लिखित संविधान है। लिखित को बदलना आसान नहीं होता है परन्तु लिखित का अनुसरण (follow) करना ज़्यादा आसान होता है। अलिखित की हर कोई अपने तरीक़े से व्या ख्यास कर लेता है। इसलिए व्याकरण बनाने से सुविधा हो जाती है।

हृदयकान्त दीवान : हर भाषा का मौखिक व्याकरण होता है। किसी भी भाषा में परिवर्तन जितना लिखित में मुश्किल है कई पहलुओं में लगभग उतना ही मौखिक में भी मुश्किल है। हरियाणा के अलग-अलग क्षेत्रों में अगर आप जाएँगे जैसे कैथल, करनाल, महेंद्रगढ़, रेबाड़ी तो इन सब जगह की हरियाणवी में भी बहुत फ़र्क़ है।

आदित्य : मैं एक बात और जोड़ना चाहूँगा हिन्दी का प्रभुत्व पिछले 100-150 सालों में ही बढ़ा है। अगर आप ब्रज भाषा को देखेंगे या ब्रजभाषी क्षेत्रों में जाएँगे वहाँ तुलसीदास के ज़माने से यानी सन 1500 से ब्रजभाषा बोली जा रही है, हिन्दी बोलने वाले थे ही नहीं। उर्दू ही दफ़्तरी भाषा हुआ करती थी। हिन्दी तब प्रचलन में आई जब एक ख़ास तरह के राष्ट्रवाद का उदय हुआ।

नीतू पांचाल : परिवर्तन समाज का नियम है। आज हिन्दी का प्रभुत्व है, आने वाले 100 सालों के बाद पता नहीं किस भाषा का प्रभुत्व होगा। आजकल हिन्दी को बचाने के प्रयास कर रहे हैं। हम कई ऐसी संस्थाओं से जुड़े हैं जहाँ हिन्दी को बचाने के प्रयास किए जा रहे हैं कि हिन्दी कहीं प्राकृत की तरह लुप्त न हो जाए।

हृदयकान्त दीवान : मुझे नहीं लगता हिन्दी लुप्त होगी, क्या आपको लगता है कि हिन्दी लुप्त हो सकती है?

नीतू पांचाल : ऐसा नहीं है। आप दूरदर्शन पर, मीडिया चैनल पर देखिए अँग्रेज़ी भाषा का प्रभाव ज़्यादा आ गया है। 'आज तक' जैसे बड़े चैनल में हिन्दी के वाक्यों में किस तरह की ग़लतियाँ होती हैं, अशुद्धियाँ होती हैं।

हृदयकान्त दीवान : वह शायद हिन्दी के वाक्यों में ग़लतियाँ नहीं हैं, यह तो उनमें हरियाणवी का, पंजाबी का, उड़िया का पुट आ रहा है।

नीतू पांचाल : मैं 'वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ होती हैं' यह कह रही हूँ।

हृदयकान्त दीवान : वर्तनी का मतलब क्या है? यदि आप मध्य प्रदेश में जाएँगी तो वहाँ 'शक्कर' को 'सक्कर' बोल सकते हैं, 'चक्कर' भी बोलते हैं, यदि बोलने में यह फ़र्क़ है तो लिखने में भी यह होगा। अब मात्रा की बात करें तो हम कितनी बार मात्राओं को बोलते समय छोटी को बड़ी और बड़ी को छोटी बोलते हैं? बताइए।

नीतू पांचाल : मैं आपको एक उदाहरण देती हूँ। मैंने कहा कि हम बच्चों को 500 मीटर की दौड़ करवा रहे हैं। एक बच्चे को मैं पहले ही 100 मीटर आगे खड़ा कर रही हूँ और बाक़ी बच्चों को 100 मीटर पीछे खड़ा कर रही हूँ और उनको बोलती हूँ कि अब दौड़िए। अगर आगे खड़ा होने वाला बच्चा जीतता है तो उसने नियम को तोड़ा है। वैसे ही मानक रूप का मतलब ही क्या है कि अगर आपने भाषा के नियमों का अनुसरण नहीं किया।

हृदयकान्त दीवान : इसका मतलब है जो बच्चे 200 मीटर आगे हैं, यानी पहले से ही जो मानक भाषा पढ़ते हैं, मानक भाषा बोलते हैं, मानक भाषा की परिस्थिति में रहते हैं। और उनको आप 200 मीटर आगे खड़ा कर रही है और उन बच्चों को जो पीछे से शुरू कर रहे

हैं जिनकी भाषा में हरियाणवी झलकेगी, पंजाबी झलकेगी, या तो ईस्कूल बनेगा या कूल बनेगा उन बच्चों को आप 200 मीटर पीछे करेंगी?

नीतू पांचाल : अगर हमें किसी चीज़ को सर्वमान्य बनाना है, तो करना ही होगा।

हृदयकान्त दीवान : सर्वमान्य क्यों बनाना है, उन दूसरे बच्चों की भाषा को सर्वमान्य क्यों नहीं बनाना है?

नीतू पांचाल : फिर एकरूप कैसे रहेगा? एकरूपता कैसे आएगी?

हृदयकान्त दीवान : हमने शुरू किया था कि भारत देश की बहुत सारी भाषाएँ हैं और हमें इस पर गर्व करना चाहिए। और हम ही यह बात लेकर आ गए कि हमको तो एकरूपता और एक भाषा चाहिए।

नीतू पांचाल : मैं एक और बात रखना चाहती हूँ। 'आजतक' एक हिन्दी चैनल है।

हृदयकान्त दीवान : नहीं। 'आजतक' एक टेलीविज़न चैनल है। हिन्दी चैनल का क्या अर्थ है यह मैं नहीं समझ रहा हूँ।

अंशु कुमारी : मतलब इस चैनल में जो भी सम्प्रेषण, बातचीत होती है वह हिन्दी में होती है।

रजनी द्विवेदी : आपने ही कहा था कि 'हिन्दी' उर्दू का शब्द है, तो अगर उर्दू में हिन्दी मिल सकती है, हिन्दी में उर्दू मिल सकती है, हिन्दी में अँग्रेज़ी आ सकती है तो हिन्दी में हरियाणवी और राजस्थानी क्यों नहीं आ सकतीं?

नीतू पांचाल : मैं वर्तनी की बात कर रही हूँ।

हृदयकान्त दीवान : वर्तनीगत अशुद्धियाँ मतलब क्या?

रजनी द्विवेदी : आपने 'भीतर' का उदाहरण दिया था। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं, जैसे राजस्थान में बहुत सारे इलाक़े ऐसे हैं जहाँ 'चूहा' की जगह 'सूहा' बोलते हैं, 'शक्कर' की जगह 'सक्कर' बोलते हैं। बच्चा वही बोल रहा है और वही लिख रहा है। 'आजतक' के चैनल देखने वाला बच्चा अगर उसको 'सूहा' लिख रहा है तो क्या समस्या है? अगर वह यह लिखता है कि 'टीचर की हड़ताल हुई' तो हम मान लेंगे कि यह ठीक है। तब हम यह नहीं बोलेंगे कि 'शिक्षक की हड़ताल हुई' ऐसा लिखना चाहिए लेकिन जब बच्चे ने चूहा की जगह सूहा लिख दिया तो गड़बड़ है।

नीतू पांचाल : बोर्ड परीक्षाएँ होती हैं तब अध्यापकों को उत्तर पुस्तिका को जाँचने के लिए एक कुंजी दी जाती है।

हृदयकान्त दीवान : हम 'आजतक' चैनल की बात कर रहे हैं। मैं तो कहूँगा कि बोर्ड परीक्षाओं की कुंजी बदलनी चाहिए।

नीतू पांचाल : नहीं, कुंजी तो एक तरह से सही है। नहीं तो, सब अपने-अपने हिसाब से जाँचेंगे।

हृदयकान्त दीवान : आप अपने विवेक से पढ़ाते हैं, आप अपने विवेक से अंक नहीं दे सकते?

नीतू पांचाल : अगर ऐसा करते हैं तो उस पर प्रश्न उठेंगे।

हृदयकान्त दीवान : क्या दिक़्क़त है अगर प्रश्न उठेंगे? क्या दिक़्क़त है इसमें कि हमें शिक्षक के ऊपर विश्वास करना चाहिए? इनमें क्या समस्या है? हम यह क्यों मानते हैं कि शिक्षक या जाँचने वाले पर हम विश्वास नहीं कर सकते? सिर्फ़ इसलिए कि सिर्फ़ 1% या 2% परिस्थितियों में कभी गड़बड़ होती है। हम उस पूरी की पूरी प्रक्रिया को उठाकर बाहर नहीं फेंक सकते। इसलिए मुझे लगता है कि हम इतना मानकीकरण और एकीकरण में जाएँगे तो कहीं न कहीं हम इंसानी प्रवृत्ति से झगड़ पड़ेंगे।

आदित्य : कहीं न कहीं आप भाषा से ही परिवर्तन के दौर में आ पाएँगे। आप 100 साल पहले के अख़बार उठाएँगे तो जैसे अभी मैंने

हिन्दी के 2 अख़बारों पर रिसर्च की– उदय और प्रताप। वह अपने ज़माने के बहुत बढ़िया अख़बार होते थे। तो उस समय भी जो सन्दर्भ (Context) में हिन्दी के शब्द होते थे, वह उन्हें अख़बारों में उपयोग करते थे। (आप मीडिया की जो बात कर रही हैं न) मीडिया भी उन्हीं शब्दों का उपयोग करता है जिससे वह लोगों से जुड़ पाए। मीडिया का काम कनैक्शन बनाना है, अगर वह एकदम शुद्धिकरण में ऊतारू हो जाएँगे या हिन्दी के शुद्धिकरण का उपयोग करेंगे तो आधे लोग उसे समझेंगे ही नहीं।

अमित प्रकाश : मेरा एक प्रश्न था आपसे। जैसे आपने कहा मैथिली और भोजपुरी कभी बहुतायत में बोली जाने वाली भाषाएँ थीं। आपने ब्रजभाषा का उदाहरण दिया। तो यह हिन्दी की शुरुआत कैसे, कब और कहाँ हुई फिर?

आदित्य : हिन्दी राष्ट्रवाद की जब शुरुआत होती है इसके लिए आप एक किताब पढ़िए। लेखिका हैं, Fracesca Orsini, और किताब है *"लैंग्वेज एंड लिटरेचर इन द एज ऑफ़ नेशनलिज़्म।"*

यह आपको लाइब्रेरी में मिल सकती है या ऑनलाईन भी मिल जाएगी। Francesca orsini स्कूल आफ ओरियंटल एण्ड एशियन स्टडीज़, लंदन यूनिवर्सिटी में पढ़ाती हैं। यह हिन्दी की प्रोफ़ेसर है। वह लंदन की है, यहाँ आकर उन्होंने अख़बारों व अन्य स्रोतों पर शोध किया कि हिन्दी राष्ट्रवाद के ज़रिए कैसे मुख्यधारा में आती है। हिन्दी से एक public consciousness बन रही थी, आप भी हिन्दी बोल रहे हैं, मैं भी बोल रहा हूँ तो बाकी भाषाओं को छोड़कर कहीं न कहीं एक 'सामान्य हित' के रूप में हिन्दी को उठाया गया ताकि सबको जोड़ सकें। आप ब्रज बोल रहे हों, कोई हरियाणवी, कोई मध्य प्रदेश की भाषा बोल रहा है, बोलियाँ (अन्य भाषाओं) को पीछे धकेला गया है। बोलियाँ भी भाषा ही हैं जिनको जगह नहीं मिली, मंच नहीं मिला। जब हम उनको बोली कहते हैं तो कहीं न कहीं देशी साहित्य को हाशिए पर डाल रहे होते हैं।

रजनी द्विवेदी : दूसरा यह भी है कि जैसे जनगणना के आँकड़ों को आप देखेंगे, इस बारे में लोग बहुत बात करते हैं कि एक ज़माने में जो सबसे पहले 1961 में किया गया था उसमे 16824 भाषाएँ थीं। हो सकता है इससे अधिक हों। लेकिन मान लीजिए मेरी मातृभाषा मेवाड़ी है, कोई अगर आता है और पूछता है कि आपकी भाषा क्या है, मातृभाषा क्या है तो लोग इतना नहीं सोचते हैं, वह उसको भाषा ही नहीं समझते हैं और बोल देते हैं हिन्दी है। तो, जो यह भाषाएँ है जैसे कोई हिन्दी भी बोलता है, ब्रज भी बोलता है। जैसे अगर आपके पास ही आएँगे तो आप बोल देंगे हिन्दी है, आप हरियाणवी को दर किनार कर देंगे। ऐसे बहुत से लोग है। तो जब वह आँकड़े भी इकट्ठा करते हैं तो हिन्दी का आउटपुट ज़्यादा होगा। लोग सवाल करते हैं कि आपने क्या सवाल पूछा, किस तरीके से सवाल पूछा। तो इसमें भी यह हो जाता है कि जैसे आप बोलें कि राजस्थान में ज़्यादातर लोग हिन्दी भाषी हैं तो यह ठीक नहीं होगा। क्योंकि शेखावटी में शेखावटी बोलते हैं, मारवाड़ क्षेत्र में मारवाड़ी या मेवाड़ी बोलते हैं, बीकानेर, जोधपुर में हाड़ोती बोलते हैं लेकिन वह सब अपने आप को हिन्दी भाषी कहते हैं। जबकि बोलने वाले वह यह भाषाएँ हैं वहाँ इसके अलावा भी भाषाएँ हैं।

आदित्य : वह अपने आप को जोड़ते हैं, नेशनल डिस्कोर्स का हिस्सा बन जाते हैं कि हिन्दी हमारी राष्ट्रीय भाषा है। भले ही वह शेखावटी में कुछ और, उत्तर प्रदेश में कुछ और, हरियाणा में कुछ और बोलेंगे।

रजनी द्विवेदी : अभय कुमार दुबे की भी एक किताब आई है, हिन्दी में। हम इसे भी पढ़ने से पूरे मसले को समझने में मदद मिलेगी।

नीतू पांचाल : मेरी एक जिज्ञासा है। अभी बात चल रही है कि कुछ न कुछ तो नियम निर्धारित करने पड़ेंगे ताकि झगड़े ना हों। मान लीजिए कि आप सड़क पर जा रहे हैं, ट्रैफिक भी है। हमें यह बताया गया कि हमने कुछ नियम

बना लिए, वह भी सर्वसम्मति से, अपने किसी एक की मर्ज़ी से शायद नहीं। अगर लाल बत्ती है तो हमें रुकना है। अगर मैं मान लूँ कि मेरा नियम तो अलग है, मुझे लाल बत्ती पर जाना है। और बाक़ी सबने तो वही नियम का पालन किया। तो अगर इस तरह से हर एक व्यक्ति अपने लिए अलग-अलग नियम बनाएगा तो हम किस तरह से चीज़ों को सम्भा ल पाएँगे। हमें कुछ तो नियम बनाने ही पड़ेंगे। जैसे पेपर चेक करने वाली बात हो रही थी कि वह कुंजी भी शायद इसलिए दी जाती है कि उसके ऊपर विवाद न हो। मान लीजिए कि एक बच्चे ने कह दिया कि मैंने तो यह लिखा था तो हम कैसे निर्धारित करेंगे?

आदित्य : हम रुल्स को भी सर्वव्यापी नहीं बना सकते। जो ट्रैफिक नियम के लिए थी वह अवधारणा भाषा के लिए नहीं प्रयोग हो सकती। वह अलग चीज़ है।

अंशु कुमारी : बोर्ड परीक्षाओं में कुंजी भी जो दी जाती है वह सिर्फ़ आपको आउटलाइन दे दी जाती है कि यह बिन्दु हैं जिन्हें व आपको वरीयता देनी है लेकिन उनके अलावा भी टीचर के रूप में आपको स्वतन्त्रता होती है कि बच्चे ने जो अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दु लिखे हैं और वह आपकी जानकारी में है, कुंजी में वह नहीं दिया है, आपको भी अगर पता है उसके बारे में तो आप उसपर विचार कर सकते हैं या आपसे ऊपर विभागाध्यक्ष हैं उनसे पुष्टि कर सकते हैं।

नीतू पांचाल : लेकिन शिक्षक ही भ्रमित होते हैं।

रजनी द्विवेदी : यह जो कुंजी देना है मुझे लगता है कि यह आपके आत्मविश्वास को पूरी तरह से तोड़ते हैं। आपको अपने बच्चों के ऊपर विश्वास है और बच्चे ने क्या जवाब दिया वह आप सबसे बेहतर जान सकते हैं।

अमित प्रकाश : बिल्कुल तोड़ रहे हैं। शिक्षक पर भरोसा नहीं है। एक अध्यापक पूरे साल पढ़ा रहा है उस पर आपको भरोसा नहीं है कि वह पेपर ठीक से जाँच पाएगा या नहीं। उसको बाहर से कुंजी दी जा रही है।

नीतू पांचाल : यह समझना पड़ेगा हम लोगों को कि मुझे अपने बच्चों के ऊपर भरोसा है और उसको पढ़कर अगर मुझे लग रहा है कि उसने कुछ सीखा है तो मैं उसको नम्बर दूँगी। लेकिन हम अपने ही बच्चे का पेपर वहाँ पर चेक नहीं कर रहे होते हैं, और भी बच्चों के पेपर होते हैं।

मान लीजिए कि बच्चे को किसी प्रश्न का उत्तर एक शब्द में देना है और बच्चे ने वहाँ पर कोई वर्तनी सम्बन्धी ग़लती कर दी तो टीचर कैसे तय करेगा कि मुझे इसको यहाँ नम्बर देने हैं या नहीं देने हैं।

हृदयकान्त दीवान : देखिए, पर्चे का प्रकार भी एक समस्या है। वहीं से यह समस्या शुरू होती है क्योंकि किस तरह से जाँचा जाना है और किस प्रक्रिया से जाँचा जाना है यह भी उसी से तय हो जाता है। हम लोग जब पढ़ते थे तो इस तरह के पर्चे नहीं आते थे। हमसे निबन्ध लिखवाए जाते थे और हमने तोड़ भी निकाल लिया कि हम रटकर चले जाते थे। पर, अगर हर बार नए निबन्ध पूछें तो फ़ायदा होगा। जैसे भाषा को इस संवाद में समझा है, कि रचनात्मकता, सृजन, पढ़ना सीखना, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता इन सबको ध्यान में रखते हुए भाषा पढ़ाई थोड़ी जाती है। यदि आप ऐसा करवाते हैं तो बच्चे को इसका फ़ायदा होगा। लेकिन फिर यह सभी जगह होना चाहिए। और हमारे तंत्र का भी हिस्सा बनाना चाहिए।

नीतू पांचाल : कहा तो सभी को जाता है लेकिन कहीं न कहीं व्यक्तिगत चीज़ें हावी हो जाती हैं। अध्यापकों के लिए भी जो नियम होते हैं वह सभी के लिए होते हैं। लेकिन जो ख़ुद के विचार हैं, सही और ग़लत की ख़ुद की परिभाषाएँ हैं वह तो कहीं न कहीं वहाँ पर लागू हो जाती हैं।

आदित्य : वस्तुपरकता आना थोड़ा-सा

मुश्किल है। एक जैसे नियम सभी जगह लागू नहीं हो सकते।

नीतू पांचाल : मैं अभी हिन्दी के कई मंचों से जुड़ी हूँ। वहाँ के जो टीचर्स थे वह पेपर चेक करके आए। इन टीचर्स को यहाँ एक वाक्य दे दिया था और उनसे पूछा गया कि कौन-सा समास है। अब वहाँ पर 2 समास के नियम लागू हो रहे हैं और टीचर्स भी यही कहेंगे कि दोनों में से कोई भी ठीक हो सकता है। वहाँ पर कई बार टीचर्स भी उलझन में आ जाते हैं कि यहाँ पर मैं किसका समर्थन करूँ।

हृदयकान्त दीवान : जो टीचर्स को ही नहीं आता तो वह बच्चे से पूछने का मतलब क्या है?

नीतू पांचाल : प्रश्न बनाने वाला कोई और है, उत्तर चेक करने वाला कोई और है।

अंशु कुमारी : उत्तर चेक करने वाले के ऊपर भी विभागाध्यक्ष होते हैं उनसे पुष्टि करो। अगर नहीं हैं तो वह उसका सामान्यीकरण कर देते हैं कि या तो सबको उसके अंक नहीं मिलेंगे या फिर सबको समान मिलेंगे।

नीतू पांचाल : लेकिन यह प्रक्रिया कितनी लम्बी हो जाएगी। मैं इतने सारे लोगों से जाकर पूछूँगी।

अंशु कुमारी : यह व्यवस्थित प्रक्रिया होती है, आप अकेले नहीं होते, कम से कम 20-25 टीचर्स होते है, उनसे ऊपर विभागाध्यक्ष होते हैं, उनसे ऊपर भी होते हैं। और पेपर चेक करने की यह प्रक्रिया एक सप्ताह, 10 दिन तक लगातार चलती है। इस तरह के प्रश्नों पर, जहाँ संशय की स्थिति है, चर्चा कर सकते हैं। और ऐसे प्रश्न फिर समझ से लिखे भी जा सकते हैं और जब आगे भविष्य में पेपर बनाए जाते हैं तब उसमें इन चीज़ों को ध्यान रखा जाए।

नीतू पांचाल : कुछ असन्तुष्ट टीचर ही होते होंगे न जो 20-25 टीचर्स से चर्चा करने के बाद भी ग्रुप में उस चीज़ को डाल रहे हैं कि मैं उलझन में हूँ। कुछ न कुछ तो असन्तुष्टि रही होगी न टीचर की कि पूछने के बाद भी वह आकर साझा कर रहा है कि इसका क्या सही जवाब होना चाहिए।

हृदयकान्त दीवान : दिक़्क़त असन्तुष्टि से नहीं है, दिक़्क़त है एक ही सही जवाब होने से। कई परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जिनमें एक से अधिक जवाब हो सकते हैं। देखना पड़ेगा कि क्या स्थितियाँ हैं और क्यों? इस जवाब को सही माने और क्यों एक दूसरे जवाब को भी। क्या तर्क दिए गए हैं। मुश्किल यही है कि इंसानी प्रवृत्ति जो एकरूपता की नहीं है उसके बावजूद हम एकरूपता की ओर ही जाना चाहते हैं।

सारांश : संवाद से ज़ाहिर होता है कि भाषा का मसला जो कि आमतौर पर सरल माना जाता है और बाक़ी सब विषयों की तुलना में कम उलझा हुआ समझा जाता है, असल में कितना जटिल है। भाषा और भाषा सीखने-सिखाने के क्या-क्या पहलू हैं जो भाषा की कक्षा को प्रभावित करते हैं। इन मसलों पर केन्द्रित इस बातचीत में मातृभाषा किसे कहें, मातृभाषा और मानक भाषा में कैसे समन्वय हो, भाषा की पाठ्यपुस्तकें कैसी हों, प्राथमिक कक्षाओं में क्या हो, उच्च प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण में क्या हो, भाषा और बोली की समझ व टकराहट का मामला, भाषा का विकास और भाषा में बदलाव, भाषाओं का मेल, आकलन की प्रक्रिया, शिक्षकों पर विश्वास आदि कई मसले उभरकर सामने आए। इन मसलों में ऐसे कई बिन्दु थे जिनसे हम एक स्तर पर सहमत होते हैं लेकिन उनको व्यवहार में लाने की जब बात होती है या थोड़ी गहराई से उन पर विचार-विमर्श होता है तब एक विरोधाभास लगता है। यह विरोधाभास मातृभाषा में सीखने-सिखाने की बात हो, या भाषाओं के मानकीकरण की, भाषाओं के दर्जे की या कोई और सभी में दिखता है।

मातृभाषा में शिक्षण की बात से सभी सहमत थे, उसे बच्चे की अस्मिता, व्यक्तित्व का हिस्सा भी मानते हैं, लेकिन कक्षा शिक्षण में मातृभाषा

की बात करें तो वह सिर्फ़ एक साधन है, टूल है मानक भाषा की ओर ले जाने का, एक सर्विस लेन है मुख्य सड़क पर आने के लिए... ऐसा भी नहीं है कि इन मुद्दों को व्यक्तिगत तौर पर महसूस नहीं किया जाता। संवादकर्ताओं ने यह भी कई जगहों पर अभिव्यक्त किया कि वह सभी अपनी मातृभाषाओं से प्यार करते हैं, अपने लोगों के बीच उसी भाषा में बात करना चाहते हैं, अपनी भाषा को एक ख़ास दर्जा देते हैं, और चाहते हैं कि वह भी अन्य भाषाओं के समान ही मानी जाए लेकिन वही (हम) नहीं चाहते कि स्कूल में, कक्षा में बच्चे अपनी मातृभाषा का प्रयोग करे।

सवाल यह भी है कि मातृभाषा में शिक्षण का मतलब क्या है? क्योंकि एक स्तर पर जाने के बाद तो उसे मानक भाषा ही पढ़नी है। और उन बहुत से बच्चों के सन्दर्भ में यह कहना जायज़ भी है क्योंकि आज भी ऐसी कई मातृभाषाएँ हैं जिनमे सीखने-सिखाने की सामग्री ही उपलब्ध नहीं है।

यह भी माना गया कि भाषाएँ एक-दूसरे से शब्दों को लेती हैं, और इस तरह समृद्ध भी होती हैं लेकिन फिर वही कि कक्षा में बच्चे ऐसा नहीं कर सकते। बहुत से सवाल भी उभरे; भाषा कैसे विकसित होती है, भाषा कैसे बदलती है, हिन्दी पहले आई या अवधि या ब्रज या भोजपुरी। कुछ सवालों के जवाब हैं कुछ ऐसे हैं जिनके जवाब हमारे पास भी नहीं हैं। लेकिन यह ज़रूर है कि सभी मसले भाषा पर विमर्श और भाषा में विमर्श की माँग करते हैं।